चन्दामामा
मई १९८४
२ रु

Pic. E. Hanumantha Rao.
Courtesy: World Wildlife Fund-India Photo Library.

Campa
Campa
Campa
कैम्पा के संग संग
लेते मज़ा हम !
Campa
कैम्पा आरेंज फ्लेवर - मौजमस्ती का स्वाद !
OBM/5361

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

विकलांगों की आह और आशीर्वाद दोनों में से हम क्या लें-यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि हम उनके प्रति कैसा व्यवहार करते हैं। उनके प्रति व्यवहार की शिक्षा देने वाली वसुन्धरा की मार्मिक कहानी 'विकलांग' पढ़ना न भूलिये ।

अपने से छोटे के प्रति की गई क्षमा जीवनदान बन कर वापस आ जाती है। इसका प्रमाण है—इस महीने की अरब्य रजनी की कहानी का मुख्य पात्र सुलतान मुबारक ।

जब दो पड़ोसी शत्रु देश मित्र बन जायें-सच्चे और योग्य दूत की कसौटी यही है। हमारे भावी दूतों को इस बात की शिक्षा लेनी चाहिये इस माह के 'मेघावी दूत' से ।

अमर वाणी

विद्या न शोभते पुंसो, यदि न स्यात् रसज्ञता ।
लवणेन विना शाकाः, सुपकना अपि निष्फला ।।

[शाक-सब्जी चाहे कितनी ही कुशलतापूर्वक क्यों न पकाई गई हो, यदि उसमें नमक नहीं पड़ा हो तो वह बेकार सिद्ध हो जाती है। उसी प्रकार रस के अभाव में विद्या भी अनुपयोगी सिद्ध हो जाती है।]

वर्षः ३६ मई १९८४ अंकः ९

एक प्रतिः २-०० :: वार्षिक चन्दाः २४-००

चन्दामामा विशेष संवाद

'चन्दामामा दूर के'

कहते हैं, चाँद पृथ्वी से धीरे-धीरे दूर खिसकता जा रहा है और प्रत्येक शताब्दी में क्रमशः छोटा दिखाई देता है। इस प्रकार चाँद के दूर हो जाने से भविष्य में पूर्ण सूर्य ग्रहण सम्भव नहीं हो सकेगा। फिर भी ऐसा होने में कई लाख वर्ष लगेंगे।

घड़े में यात्रा

स्पेन के दो युवकों ने हाल ही में एक बड़े घड़े में बैठ कर ईब्रो नदी पर दो सौ तीस किलो मीटर की यात्रा पूरी कर ली है।

नेपोलियन के जहाज़

सन् १७९८ ई० में नील नदी में जो युद्ध हुआ था उसमें ब्रिटिश नौकादल के अधिपति ऐडमिरल नेलसन ने नेपोलियन बोनापोर्ट के चार जहाज़ों को डुबा दिया था। हाल में पता चला है कि वे चारों जहाज़ अभी तक अलेक्ज़ेंड्रिया के समुद्री तट से ८ किलो मीटर की दूरी पर पानी के नीचे ज्यों की त्यों सुरक्षित हैं। उन्हें बाहर निकालने का काम शुरू हो गया है।

क्या आप जानते हैं ?

१. साहित्य के लिए प्रथम नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखक कौन हैं ?
२. शान्ति के लिए प्रथम नोबेल पुरस्कार किसने प्राप्त किया ?
३. भौतिक शास्त्र में पहला नोबेल पुरस्कार किन्हें मिला ?
४. किस वैज्ञानिक को रसायन शास्त्र में प्रथम नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ ?
५. चिकित्सा शास्त्र में सबसे पहले किन्हें नोबेल पुरस्कार दिया गया ?

उत्तर ६४ वें पृष्ठ पर देखें

विकलांग

सुधीर जन्म से ही गोरा और सुन्दर बालक था। जो भी उसे देखता, मुग्ध हो जाता। सब लोगों के मुख से अपने सौन्दर्य की प्रशंसा सुन कर सुधीर धमण्ड़ी बन गया।

उसके गाँव में एक कानी लड़की थी, टेढ़ी नाक वाला एक लड़का था, एक लूला भिखारी तथा एक लंगड़ा दादा रहते थे। सुधीर इन विकलांगों को कुछ न कुछ कह कर अपमानित किया करता था और उनका मज़ाक उड़ाया करता था।

सुधीर की माँ अपने बेटे की शरारत देख दुखी रहती और बराबर उसे समझाती रहती— "बेटा! विकलांगों की हमें मदद करनी चाहिये। उन्हें सताना या तंग करना तो भारी अपराध और पाप है।" किन्तु ये बातें उसके दिल तक पहुँचती ही न थीं।

एक दिन सुधीर ने उन विकलागों को बहुत तंग किया। उस पर वे सब के सब चिढ़ कर उसे मारने दौड़े। पर सुधीर उनकी पकड़ से बच कर भाग निकला। तभी चारों विकलांग रो-रो कर चिल्लाने लगे— "हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि हमें इतना सताते हो। तुम्हें जरूर एक दिन हमारी आह लग जायगी।"

उनकी यह बात सुन कर यद्यपि सुधीर हँस पड़ा फिर भी उनके शाप से वह डर गया और यह डर उसके मन में इस प्रकार बैठ गया कि कह सदा उसकी याद करके विकल रहने लगा।

इस घटना के कुछ दिन बाद उसके पिता गाँव छोड़कर शहर में जा बसे। धीरे-धीरे सुधीर बड़ा हो गया और युक्त वयस्क होते ही उसके पिता ने एक सुन्दर कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया।

कुछ दिनों के बाद सुधीर के माता-पिता चल बसे। लेकिन उसके पिता ने शहर में व्यापार करके काफी सम्पत्ति कमा ली थी, इसलिए पिता की मृत्यु के बाद उसे किसी प्रकार

से आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ा। उस के दिन आराम से बीतने लगे।

काल क्रम में सुधीर की पत्नी गर्भवती हो गई। गर्भ के नौवें महीने में सुधीर अपनी पत्नी को ससुराल में छोड़ कर शहर वापस आ गया।

उस दिन रात में सुधीर को नींद नहीं आई। उसे अपने गाँव की सारी घटनाएँ याद आने लगीं। उसने जान-बूझ कर विकलांगों का कितना अपमान किया था। उसके अपमान से तंग आकर उन सबने मिल कर जो शाप दिया था, वह अब उसके दिल को मथ रहा था। रह-रह कर उसका दिल काँप उठता था। इस तरह सोचते-सोचते वह थक गया और अप्रयत्न ही उसकी आँख लग गई, उसे पता न चला, न मालूम वह कब सो गया।

कुछ दिनों के बाद उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह शिशु हाथ से लूला, पाँव से लंगड़ा और एक आँख से काना था तथा उसकी नाक टेढ़ी थी। सुधीर अपने बेटे को देख कर निश्चेष्ट रह गया।

पर सुधीर की पत्नी तनिक भी विचलित नहीं हुई और बोली— "देखो तो, हमारा मुन्ना कैसा प्यारा-प्यारा लगता है।"

कौए का बच्चा कौए के लिए प्यारा होता ही है। इसी प्रकार माँ को भी अपनी सन्तान प्यारी होती ही है चाहे वह कैसी भी क्यों न हो। इस बात को भाँप कर सुधीर भी झट बोल उठा-"हाँ हाँ! तुम ठीक कहती हो, देखो कैसा सुन्दर और प्यारा बच्चा है।"

उस दिन से सुधीर ने एक विचित्र बात देखी। सुधीर की पत्नी तथा अन्य किसी ने भी उसके बेटे को विकलांग नहीं बताया। उल्टे, जो भी बच्चे को देखता, उसके सौन्दर्य की तारीफ़ करता।

उसने सोचा कि बच्चे की माँ तो वात्सल्य के कारण तथा अन्य लोग उसकी सम्पत्ति के कारण बच्चे की उपेक्षा और अवहेलना नहीं करते हैं लेकिन यह सच था कि उसका बेटा विकलांग है। यह सोच कर उसका हृदय बेचैन हो उठता कि जब वह अन्य बच्चों के साथ खेलने जायेगा तो वे बालक उसका मज़ाक उड़ायेंगे। इसलिए बच्चे को हर समय या तो अपने पास रखना

होगा या माँ के पास, क्यों कि माता-पिता के साथ बच्चे को देख कर कोई भी उसके साथ परिहास करने का साहस नहीं करेगा। उसे बराबर अपने बचपन की बातें याद आतीं और वे बातें उसके दिल को खुरेदने लगीं। इसलिए वह अपने बच्चे को घर से बाहर भेज कर अन्य बच्चों के बीच उसे मजाक़ का कारण बनने नहीं देना चाहता था।

ये ही सारी बातें सोचकर सुधीर इस प्रकार बड़ी सावधानी से अपने बच्चे को पालने लगा। अब उसे समझ में आने लगा कि जब उसने बचपन में विकलांगों की अवहेलना की थी, तब उनके मन में कितनी पीड़ा हुई होगी। साथ ही, उसके मन में यह धारणा भी बैठ गई कि उनके शापों के कारण ही उसके पुत्र की यह हालत हुई है।

उन्हीं दिनों सुधीर के मकान के समीप ही एक सराय में एक साधु ठहरे हुए थे। लोगों में यह प्रचार था कि उन्हें कई अदभुत शक्तियों की सिद्धि प्राप्त है। सुधीर ने उन महात्मा को अपने घर पर निमंत्रित कर अपने पुत्र को दिखाया।

साधु ने बालक को देख कर कहा— "तुम्हारा पुत्र दीपक समान है। तुम बहुत भाग्यशाली हो।"

सुधीर ने अपने पुत्र को घर के भीतर भेज कर साधु से अपने मन की व्यथा सुनाई। उसकी बातें सुन कर महात्मा गम्भीर हो गये। फिर सुधीर को सलाह देते हुए बोले— "तुम तुरन्त

अपने गाँव जाकर उन सबसे क्षमा मांगो जिन्हें तुमने अपमानित किया है। पश्चात्ताप से बढ़कर कोई पुण्य नहीं होता। पश्चात्ताप करने से तुम्हारे सारे पाप धुल जायेंगे और तुम्हारे मन को भी शांति मिलेगी। लेकिन यह बात भी सच है कि अगर हम किसी से अपने अपराधों के लिए क्षमा याचना करते हैं तो वे निश्चय ही हमारी गलतियों को क्षमा करेंगे और हमारे साथ वे आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करेंगे। तुम अपने मन की सारी शंकाओं और चिंताओं को भूल जाओ। पर तुमने बचपन में जिन लोगों का मजाक़ उड़ाया है, इनमें से लंगड़ा दादा अब जीवित नहीं है, लेकिन उसी गाँव में उसकी समाधि बनी हुई है। तुम उसकी समाधि से ही

क्षमा मांग लो। तुम्हारे पुत्र का विकलांग दोष अवश्य दूर हो जायेगा।''

सुधीर उसी वक्त अपने गाँव के लिए चल पड़ा। गाँव पहुँच कर उसने कानी कन्या, देढ़ी नाक वाले लड़के तथा लूले भिखारी से मिल कर क्षमा मांग ली। उन सब ने बड़े प्यार से कहा— ''हम कभी अपने शत्रुओं के लिए भी ऐसी बुरी कामना नहीं करेंगे। ऐसा करने पर खुद हमारी ही हानि होगी और हमें पाप का कलंक लगेगा। हम तो उन बातों को कभी भूल गए हैं। समाज में अकसर एक दूसरे का मजाक़ उड़ाना सहज है। इस बात को लेकर तुम क्यों व्यर्थ ही परेशान हो जाते हो। आखिर तुम्हें क्षमा करने केलिए हम कौन ऐसे बड़े व्यक्ति हैं? फिर भी यदि हमारे क्षमा करने पर आप के पुत्र के दोष दूर हो जायें तो हमें बेहद खुशी होगी।''

उनके इस प्रेम पूर्ण व्यवहार से प्रसन्न होकर सुधीर ने प्रत्येक को दस-दस सोने के सिक्के दिये। फिर वह लंगड़ा दादा की समाधि पर पहुँचा।

समाधि के सामने हाथ जोड़ कर तथा आँखों में पश्चात्ताप के आँसू भर कर सुधीर ने कहा— ''दादा। मैंने अज्ञानता वश और घमण्डी हो तुम्हें लंगड़ा कह कर अपमानित किया था, उसके लिए क्षमा कर दो और मेरे पुत्र को आशीर्वाद दो।''

तभी अचानक उसकी नींद खुल गई। नींद खुलने पर उसका हृदय हल्का हो गया था और उसके मन में कोई बेचैनी नहीं थी, क्यों कि सपने में ही सही, विकलांगों ने उसे क्षमा कर दिया था।

इस स्वप्न के एक सप्ताह बाद समाचार मिला कि उसकी पत्नी के पुत्र पैदा हुआ है।

सुधीर समाचार मिलते ही दौड़ते हुए अपने ससुराल पहुँचा और अपने सुन्दर पुत्र को देख कर खुशी से फूला न समाया और अपनी पत्नी से बोला— ''बचपन में जिन विकलांगों को मैंने अपमानित किया था, उन सब ने मुझे क्षमा कर दिया है। इसीलिए हमारा पुत्र चाँद-सा सुन्दर है।''

१२

[पिंगल ने अपने भाइयों के अनुरोध पर नाविक को अपने घर पर निमंत्रित कर लिया। नाविक ने अपनी योजना के अनुसार पिंगल के भाइयों की सहायता से उसे बन्दी बना लिया और अपने जहाज़ में ले गया। उसके बाद पिंगल के भाइयों ने अपनी माँ को डरा-धमकाकर उसकी जादूवाली थैली तथा सारी सम्पति हड़प ली। उसके आगे पढ़िये]

जीवदत्त और लक्षदत्त ने लालचवश धन की थैली को तुरत खोल कर देखा। उसमें बहु मूल्य हीरे-जवाहिरात देख कर ये हैरान रह गये। उन्हें यह सन्देह था कि पिंगल काफ़ी धन कमा कर लाया है, लेकिन इतनी बेशुमार दौलत लेकर आया होगा, यह तो उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था।

"भैया! इस अपार धन से सिर्फ़ हमारी ही गरीबी नहीं, बल्कि हमारी कई पीढ़ियों की दरिद्रता खत्म हो गई।" जीवदत्त ने कहा।

खुशी में पागल होते हुए लक्षदत्त ने इस पर कहा— "हाँ, भैया हाँ। यदि अवन्ती नगर के राजा को यह पता लग जाये कि हमारे पास इतनी अतुल सम्पत्ति है, तो वे हमारे साथ अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव लेकर स्वयं आयेंगे। तुम्हीं बताओ, भला हमारे राज्य में किसके पास ऐसी संपत्ति होगी! आखिर राजा निर्धन व्यक्तियों के साथ अपनी बेटी का विवाह

नहीं करेंगे न ?"

अपने बेटों की इस तरह की बातचीत सुनकर उनकी माँ का दिल भर आया। वह भूल गई कि कुछ देर पहले ही उन्हीं बेटों ने उसे अपमानित किया और मारा-पीटा था। उसने वात्सल्य भाव से अपने बेटों से कहा— "बेटे! यह तो बहुत अच्छी बात है। अब तुम पहले की तरह बुरी आदतों में धन नष्ट न करो और विवाह करके आराम से गृहस्थ जीवन बिताओ। तुम्हारे पिता का नाम रोशन करो। हमने आज तक जो कष्ट भोगे, वे तुम्हारी संतान को भविष्य में भोगने की आवश्यकता नहीं रह गई। इस धन से न केवल तुम लोग सुख पूर्वक अपने दिन बिताओगे। बल्कि तुम्हारे परिवार भी कई पीढ़ियों तक घर बैठे आराम से अपने जीवन बिता सकते हैं। इस से बढ़ कर अपनी संतान से माता-पिता और क्या चाहेंगे ? मैं भी तुम लोगों की सेवा में अपनी शेष ज़िन्दगी गुजार दूँगी।"

अपनी माँ के मुँह से ऐसी बातें सुन कर दोनों बेटे उसे फिर डाँटते हुए बोले— "हम चाहें तो शादी करें या बैरागियों की तरह रहें, इससे तुम्हें क्या लेना-देना ? तुम्हें हम से तो कोई प्यार है नहीं, तुम्हारे लिए पिंगल ही सब कुछ है न। हम तुम्हारे मन को सब बातें समझते हैं। तुम इस तरह चिकनी-चुपड़ी बातें कह कर हमारे बाप-दादे की सम्पत्ति में हिस्सा लेना चाहती हो ?"

"यह तुम्हारे पिता की कमाई नहीं है, यह अकेले पिंगल की गाढ़ी कमाई है जिसे तुम दोनों आपस में बाँटने जा रहे हो। उसके पहले भी तुम दोनों ने उसके धन को अपनी बुरी आदतों में उड़ा दिया है। मैं सिर्फ़ इतना ही चाहती हूँ कि तुम लोग वह जादू की थैली मुझे दे दो। थैली रहेगी तो भूख मिटाने के लिए मुझे दर-दर भटकना नहीं पड़ेगा। और तुम लोग भी, जब इच्छा हो, आकर मन पसन्द भोजन खा सकते हो।" माँ ने गिड़गिड़ाते हुए अपने बेटों से कहा।

इस पर जीवदत्त ने माँ को झड़पते हुए कहा- "चाहे तुम भीख माँगो या भूखी मर जाओ, हमें इससे क्या मतलब है। तुम तो अब हम लोगों

की माँ न रही ।"

लक्षदत्त ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा— "बिल्कुल ठीक कहते हो भैया। हमारे पिता की सम्पत्ति को छिपा कर अपने छोटे बेटे को देने वाली भला हम सब की माँ कैसे हो सकती है ? हमारी माँ ने हमेशा पिंगल के प्रति पक्षपात किया और हमारे साथ घृणा का व्यवहार किया है। क्या हम इस बात को कभी भूल सकते हैं ? जब वह समझ गई कि सारी संपत्ति हमारे हाथ में आ गई तब वह चिकनी-चुपड़ी बात करके हमारी सहानुभूति प्राप्त करना चाहती है ! हमें इन की बातों में नहीं आना चाहिए !"

माँ ने सोचा कि इन मूर्ख और दुष्ट बेटों के साथ सिर फोड़ने का कोई लाभ नहीं। इसलिए वह हताश होकर दीवार के साथ लुढ़क गई। इसके बाद जीवदत्त और लक्षदत्त ने पिंगल की हड़पी हुई सारी सम्पत्ति आपस में बाँट ली, लेकिन जादूवाली थैली को लेकर दोनों में विवाद शुरू हो गया।

दोनों ही उस थैली को हथियाना चाहते थे। विवाद बढ़ते-बढ़ते आख़िर झगड़े में बदल गया। झगड़ा भी इस हद तक बढ़ गया कि दोनों एक-दूसरे की हत्या करने को उतारू हो गये ।

जब बात यहाँ तक बढ़ गई तो माँ ने फिर उन दोनों से गिड़गिड़ाकर कहा— "बेटे। तुम आपस में लड़कर क्यों एक दूसरे को बर्बाद करने पर तुले हो। चाहे तुम लोग कितना भी मुझे मारो-पीटो या पराया समझो, लेकिन मैं तुम्हें अपने सामने बर्बाद होते नहीं देख सकती। आखिर मैं तुम लोगों की माँ हूँ। तुम लोगों की भलाई अब इसी में है कि यह थैली मेरे ही पास छोड़ दो। इससे आपस में लड़ने की नौबत ही न आयेगी ।"

पर माँ के समझाने का उन पर कोई असर नहीं हुआ और वे आपस में लड़ते ही रहे। बल्कि जीवदत्त थैली का आधा हिस्सा लेने के लिए जिद् करते हुए उसे कद्दूकश से काटने लगा। माँ इस पर दौड़ कर उसे रोकते हुए कहने लगी— "ऐसा मत करो बेटा! ऐसा करने से इसकी महिमा जाती रहेगी और यह किसी के

काम की नहीं रहेगी ।''

''तब तो यह थैली मुझे ही चाहिए ।'' लक्षदत्त ने थैली की ओर झपटते हुए कहा ।

इस पर जीवदत्त चिल्ला कर कहने लगा— ''अरे दुष्ट ! मैं इस घर का ज्येष्ट पुत्र हूँ । शास्त्रों के अनुसार भी ऐसी महिमा वाली चीज़ों पर ज्येष्ठ पुत्र का ही अधिकार होता है । अलावा इसके पैतृक संपत्ति में से अपना हिस्सा चुनने का हक सब से पहले ज्येष्ट पुत्र को ही प्राप्त है । तुम यह बात मत भूलो कि दर असल पिंगल की संपत्ति हड़पने की सलाह मैं ने दी और यह उपाय भी मैं ने ही बताया । तुम निरे बुद्धू हो और मेरी हर बात को आँख मूँद कर आज तक समर्थन करते रहे हो । अब अनायास ये सारी चीज़ें हमें मिल गईं तो लालच में आकर तुम इन पर क़ब्जा करना चाहते हो । आखिर लोभ और लालच की भी कोई सीमा होती है ! याद रखो, तुम मेरे साथ दगा करके कभी सुखी नहीं रह सकते !''

''बड़े भाई तो वे होते हैं जो छोटे भाइयों पर दया करते हैं और उनकी हर इच्छा की पूर्ति करने में हमेशा तत्पर दिखाई देते हैं । तुम एक हो, छोटों का गला घोंटने पर तैयार बैठे हो और हमेशा अपना ही स्वार्थ देखते हो !'' लक्षदत्त ने जीवदत्त पर आरोप लगाया ।

उस प्रकार दोनों भाई बहुत देर तक आपस में लड़ते रहे । इन दोनों का झगड़ा सुन कर नगर में गश्त लगाने वाले कोतवाल ने थैली के बारे में सब कुछ जान लिया । उन्होंने सुबह राजा के यहाँ पहुँच कर सारा किस्सा सुनाया और अन्त में यह खबर बता दी ।

अवन्ती नगर का राजा बड़ा लोभी और कंजूस था । ऐसी महिमा वाली थैली के बारे में सुन कर उसके मन में लालच आ गया । उसने तुरन्त दण्डनाथ को बुलवा कर उन दोनों भाइयों तथा उनके मकान की सारी चीज़ों को अपने दरबार में पहुँचाने का आदेश दिया ।

राजा के आदेशानुसार दण्डनाथ ने अपने साथ कुछ सिपाहियों को ले जाकर जीवदत्त और लक्षदत्त को बन्दी बना लिया । इसके बाद सारे घर की तलाशी लेकर सारा धन और जादूवाली थैली को भी अपने क़ब्जे में कर लिया तथा उन्हें

राजदरबार में पहुँचा दिया ।

जीवदत्त और लक्षदत्त ने पहले राजा को सच्ची बात बताने से इनकार कर दिया । क्यों कि उन का डर था कि वास्तविक समाचार बताने पर राजा संपत्ति के साथ जादू वाली थैली को भी उन से छीन लेंगे । इसलिए उन पर काफी दबाव डालने पर भी वे अपने निर्णय पर डटे रहें । परन्तु जब राजा ने सिपाहियों से उन्हें चार-पाँच कोड़े लगवाये तब उन्होंने जान बचाने के डर से शुरू से लेकर अन्त तक की सच्ची कहानी सुना दी ।

राजा इस पर खुश होकर हँसता हुआ बोला— "तो यह सम्पत्ति तुम लोगों की नहीं है जिसे तुम दोनों आपस में बांटने की दुष्टता करते हो । हमारे राज्य के विधान के अनुसार जिस सम्पत्ति का मालिक गुलाम हो जाता है उस की संपत्ति राज्य की हो जाती है । तुम लोगों ने अपने छोटे भाई पिंगल को गुलाम के रूप में बेच डाला है, इसलिए अब वह हमारे राज्य के नागरिक अधिकारों से वंचित हो गया है । और तुम लोगों ने दूसरे की संपत्ति हड़पने की कोशिश की, साथ ही इस संपत्ति को राज्य के खजाने में नहीं पहुँचाया और न राजा या अधिकारियों को इस की सूचना दी इसलिए तुम दोनों को इस अपराध के फलस्वरूप बीस-बीस साल का कारावास दण्ड दे रहा हूँ ।"

"महाराज ! दया करके हमें छोड़ दीजिये । हमें सम्पत्ति और वह जादू की थैली भी नहीं चाहिये, लेकिन स्वतंत्र होकर जीवन-यापन करने

की आज्ञा दे दीजिये । या हमको दरबार में कोई छोटी मोटी नौकरी दीजिएगा ।" जीवदत्त और लक्षदत्त दोनों हाथ जोड़ कर राजा से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने लगे ।

लेकिन राजा उन्हें छोड़ने के पक्ष में बिल्कुल न थे, क्यों कि प्रजा के बीच जाकर वे शासन के विरोध में प्रचार करेंगे और उनमें असन्तोष फैलायेंगे । इसलिए राजा ने ये ही सारी बातें विचार कर पुनः कहा— "तुम दोनों ने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया है, इसलिए तुम्हारी सज़ा अनिवार्य है । हाँ ! तुम्हारी माता बूढ़ी है और उस की देखभाल करने वाला कोई नहीं है, इसलिए तुम्हारी माता को सरकारी खज़ाने से उसके जीवन पर्यन्त प्रति माह दस

मोहरें मिलती रहेंगी।" यह फ़ैसला सुना कर राजा उद्यान की ओर चले गये।

सिपाहियों ने जीवदत्त और लक्षदत्त के पैरों में लोहे की जंजीरें डाल दीं और उन्हें कारागार में ले जाकर एक अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया।

दोनों भाई अपनी दुर्गति पर पछताने लगे। अब वे महसूस करने लगे कि उन्होंने अपने भाई और माँ के साथ बड़ा अन्याय और अक्षम्य अपराध किया है। वे सोचने लगे कि आपस में झगड़ा न करके उस जादूवाली थैली को माँ के पास ही रहने देते तो हमारे सामने जिन्दगी भर पेट भरने में कोई तकलीफ़ न होती। एक साथ भारी संपत्ति को देखते ही हम लोग आँखें रखते हुए भी अंधे बन गए। इस प्रकार सोचते हुए वे अन्धकार, बदबू, गीली जमीन और दीवारों के बीच नरक समान लगने वाली उस अन्धेरी कोठरी में पश्चाताप करते सो गये।

उधर अपने भाइयों की धोखेबाज़ी के परिणामस्वरूप पिंगल नाविक का गुलाम बन गया था। नाविक ने पिंगल को अपने जहाज़ के अन्य गुलामों के साथ डांड़े चलाने वाली जगह पर स्थित लोहे की पटरी से बाँध दिया। सवेरा होते ही जहाज़ का लंगर उठा दिया गया और नाविक का आदेश पाकर गुलामों ने डांड़े चला कर जहाज़ को धीरे-धीरे समुद्र के अन्दर पहुँचा दिया।

महानाविक वैसे देखने में शरीफ़ मालूम पड़ता था, लेकिन वास्तव में वह एक नामी समुद्री डाकू था। व्यापार का माल एक

बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह में ले जाने के बहाने वह इस बात का पता लगा लेता था कि किस बन्दरगाह में किस जहाज़ पर कैसा माल लादा जा रहा है और फिर उस जहाज़ को समुद्र के बीच में रोक कर लूट लिया करता था। वह लूटे गये जहाज़ के लोगों को क्रूरता के साथ समुद्र में डुबा कर जान से मार दिया करता था।

पिंगल ने भल्लूक केतु द्वारा सिखाये गये मंत्र को याद करने की बहुत कोशिश की पर बहुत माथापच्ची करने पर भी उसे कुछ याद न आया। इस से बड़ा निराश हो गया। वह समझ गया था कि उसके भाइयों ने उसकी सम्पत्ति हड़पने के लिए इस नाविक के हाथ निर्दयता पूर्वक गुलाम के रूप में उसको बेच दिया है। लेकिन अब वह कुछ भी करने में असमर्थ था। वह जानता था कि उसके भाई माँ को फिर पहले की तरह ही मार-पीट करेंगे और उसकी सारी सम्पत्ति हड़प कर अपनी बुरी आदतों में बर्बाद कर देंगे। पिंगल रात-दिन यही सोचता रहता कि इस गुलामी की ज़िन्दगी से कैसे छुटकारा प्राप्त किया जाये।

एक दिन समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान आया। तूफ़ान के झोंकों से बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं। उन लहरों के थपेड़ों से जहाज़ सूखे पत्ते के समान डगमगाने लगा। नाविक सब को खतरे की चेतावनी देते हुए जहाज़ में इधर-उधर घूम रहा था। उसी समय तूफ़ान की लहरों में डगमगाता हुआ एक और जहाज़ उसे दिखाई पड़ा।

महानाविक ने दूरबीन से उस जहाज़ को बड़े

गौर से देखा। वह एक बहुत बड़ा जहाज़ था और विदेशों के साथ व्यापार में इसका प्रयोग किया जाता था। नाविक जानता था कि प्रायः ऐसे जहाज़ों में बहु मूल्य हीरे-जवाहरात और अत्यंत क़ीमती माल लदे होते हैं।

तूफ़ान में फँसे दोनों जहाज़ अपनी पूरी ताक़त लगा कर डूबने से बचने की कोशिश कर रहे थे। महानाविक ने सोचा कि ऐसी हालत में थोड़ा साहस करके यदि व्यापारी जहाज़ को घेर लिया जाये तो अपार दौलत उसे हाथ लग जायेगी। उसके अपने आदमी ऐसे खतरों के अभ्यस्त हैं जब कि व्यापारी जहाज़ के कर्मचारी अपनी जान बचाने के लिए सिर्फ़ नौका-ज्ञान ही रखते हैं।

यह विचार आते ही महानाविक ने अपने अनुचरों को वैसा ही आदेश दे दिया। उस भयंकर तूफ़ान के बीच भी उसके अनुचर अपने हथियार लेकर व्यापारी जहाज़ पर टूट पड़ने को तैयार हो गये।

पिंगल अन्य गुलामों के साथ अपनी सारी ताक़त लगा कर डांड़ चला रहा था। धीरे-धीरे उसका जहाज़ व्यापारी जहाज़ के निकट बढ़ता जा रहा था। नाविक अपने मुख्य अनुचरों के साथ मस्तूल से लग कर दूरबीन से व्यापारी जहाज़ को ध्यान से देख रहा था। तभी अचानक वह भय से काँप उठा और उसने चीखता हुआ यह आदेश दिया—

"जल्दी जहाज़ पर तीरों की वर्षा करो और अपना जहाज़ वापस पीछे करो। यह व्यापारी जहाज़ नहीं है। उस जहाज़ के लोग हमारे जहाज़ पर जलते हुए कपड़ों के साथ तीर छोड़ रहे हैं—सावधान।"

नाविक की बातें अभी पूरी भी नहीं हो पाई थीं कि सामने के जहाज़ से जलते हुए तीर नाविक के जहाज़ पर गिरने लगे। कुछ तीर नाविक के अनुचरों पर गिरे जिससे उनके कपड़े धू-धू-कर जल उठे। तभी नाविक पुनः चिल्ला उठा— "सारे गुलामों को मुक्त कर दो ताकि वे डांड़ों की जगह तलवार लेकर जहाज़ की रक्षा में लग जायें।"

(—क्रमशः)

निर्णय

धुन के पक्के विक्रम निराश नहीं हुए और पेड़ के पास पुनः लौट आये। पेड़ पर से शव को पुनः उतारा और कंधे पर डाल कर श्मशान की ओर चलने लगे। इस पर शव में स्थित बेताल ने पूछा— "राजन ! इस भयंकर श्मशान में अर्द्ध रात्रि के समय आप यह जो श्रम उठा रहे हैं, इस का कोई न कोई फल आपको मिल सकता है, इस बात से मैं इनकार नहीं कर सकता, पर शास्त्रों के नियम के अनुसार अन्य राज्यों को जीतने वाले अत्यंत पराक्रमी राजा भी क्षुद्र आरोपों और आलोचनाओं से डर कर अपने हाथ आई हुई सफलता को छोड़ कर भाग जाते हैं। इस बात का क्या भरोसा है कि आप भी अपने कार्य में सफलता पाने के बाद ऐसा नहीं करेंगे। इसके उदाहरण के रूप में मैं आपको कीर्तिसेन नामक राजा की कहानी सुनाता हूँ। मार्ग के कठिन श्रम को

बेताल कथा

किया। लेकिन दुर्भाग्यवश उज्ज्वल देश की इस बुरी हालत का नाजायज फ़ायदा उठाने के ख्याल से पड़ोसी राज्य मराल देश के राजा कीर्तिसेन ने उज्ज्वल देश पर अचानक एक दिन हमला बोल दिया। राजा विजयवर्मा ने कीर्तिसेन का डट कर सामना किया, लेकिन युद्ध में वे हार गए। कीर्तिसेन ने राजधानी पर क़ब्जा करके राजा विजय वर्मा को करागार में डाल दिया।

उज्ज्वल देश पर विजय प्राप्त करने के बाद वहां की हालत देख राजा कीर्तिसेन उत्यन्त दुखी हुए। इस वक्त कीर्तिसेन उज्ज्वल देश के राजा थे, इसलिए वहाँ की हालत सुधारना उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा। वे कुछ सैनिकों तथा राज्य के अधिकारियों को अपने साथ लेकर राज्य के सभी प्रदेशों का निरीक्षण करके जनता की आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें सहायता पहुँचाने लगे।

राजा कीर्तिसेन देश का भ्रमण करते हुए जिस दिन गिरिनगर होकर वापस चले गए, उसी दिन वासन्ती गायब हो गई। गिरिनगर से लग कर श्यामला मुखी नामक नदी बहती थी। उस वक्त नदी में ज्यादा पानी न था। रोज के नियमानुसार प्रातः काल वासन्ती उस नदी से पानी लाने के लिए गई पर लौट कर वह घर नहीं आई।

मैथिली अपनी बहन वासन्ती की खोज करते हुए नदी तक पहुँची। वहाँ वासन्ती न थी,

भुलाने के लिए सुनिए।"

बेताल कहानी सुनाने लगाः उज्ज्वल देश के गिरिनगर में मैथिली और वासन्ती नाम की दो बहनें थीं। बचपन में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था। इसलिए इनकी नानी ने दोनों बहनों को पाल-पोसकर बड़ा किया। लेकिन थोड़े दिन बाद नानी बूढ़ी होकर स्वर्ग सिधार गईं।

मैथिली और वासन्ती दोनों ही बहनें बहुत सुंदर थीं मगर साथ ही मैथिली विदुषी भी थी और वासन्ती संगीत में प्रवीण। एक बार समय पर वर्षा न होने के कारण उज्ज्वल देश में भयंकर अकाल पड़ा। वहाँ के राजा विजय वर्मा ने जनता की सहायता के लिह उचित प्रबन्ध

लेकिन पानी भरने का उसका कलश नदी के किनारे पड़ा था। वहाँ के कुछ लोगों ने मैथिली से बताया कि कलश वहाँ पर छोड़ कर नदी के तट से होकर वासन्ती आगे चली जा रही थी और उसी समय राजा कीर्तिसेन अपने सैनिकों के साथ उसी मार्ग से जा रहे थे। उन लोगों ने यह भी सन्देह प्रकट किया कि संभवतः वे ही वासन्ती का अपहरण करके ले गए होंगे।

यह समाचार सुन कर मैथिली व्याकुल हो उठी। वह उसी वक्त राजधानी में पहुँची। उस समय कीर्तिसेन का दरबार लगा हुआ था। मैथिली ने दरबार में प्रवेश करके राजा के दर्शन किए।

राजा कीर्तिसेन ने सारा वृतान्त मैथिली के मुँह से सुन कर पूछा— "अच्छी बात है। मैं अवश्य तुम्हारी बहन की खोज करवाऊँगा लेकिन यह बताओ, तुम्हें क्या किसी पर शक है ?"

मैथिली पल भर के लिए संकोच करके चुप रही फिर साहस करके बोली— "जी हाँ, महाराज !"

"बोलो, किस पर सन्देह करती हो ?" राजा ने पूछा।

"असहाय स्थिति में एक नारी का अपहरण करने वाले व्यक्ति पर !" मैथिली ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

यह उत्तर सुनकर कीर्तिसेन आश्चर्य में आकर बोले— "तुम घुमा-फिराकर बात न बनाओ, साफ़-साफ़ बतला दो।"

"महाराज, मैं साफ़-साफ़ बतला देती हूँ। मैं सब प्रकार की स्थितियों का सामना करने के लिए तैयार हो कर आई हूँ। मुझे इस बात का डर भी नहीं है कि आप मुझे कठिन दण्ड देंगे। आप कृपया बुरा न माने। सच बात तो यह है कि मैं आप पर ही शक करती हूँ।" मैथिली ने कहा।

कीर्तिसेन पलभर के लिए स्तम्भित रह गया फिर गरज कर पूछा— "क्या मैंने अपहरण किया है ?"

मैथिली विचलित हुए बिना बोली— "प्रभु ! मैं पहले ही जानती थी कि आप मेरा

उत्तर सुन कर नाराज़ हो जायेंगे। लेकिन यह शक केवल मेरा ही नहीं, बल्कि गिरिनगर के सभी लोगों का भी है। आप तो दीन- हीन हालत में स्थित हमारी राज्य-लक्ष्मी का अपहरण करने वाले धर्म-द्रोही हैं। ऐसी हालत में इस बात का क्या भरोसा है कि आप ऐसे असहाय तथा युवा नारी का अपहरण नहीं करेंगे ? आप सेना सहित जब श्यामला मुखी नदी के तट से होकर जा रहे थे, तभी मेरी बहन गायब हो गई !" मैथिली ने राजा पर आरोप लगाते हुए कहा।

मैथिली की बातों में कठोरता थी। साथ ही आसानी से स्वीकार न कर सकने वाला अभियोग भी था। इन सबसे बढ़ कर प्रखर तर्क भी था। कीर्तिसेन सभासदों के बीच सही समाधान नहीं दे पाये, इसलिए उन्होंने अपना सिर झुका लिया। सभासदों के मन में यह भ्रांति पैदा हो सकती थी कि मैथिली के आरोप में सचाई है।

कीर्तिसेन थोड़ी देर तक के लिए किन्हीं विचारों में डूब गए। फिर सिर उठा कर मैथिली से बोले, "मैं भगवान की शपथ लेकर कहता हूँ कि मैंने तुम्हारी बहन का अपहरण नहीं किया है। मैं उसकी खोज जरूर कराऊँगा। तुम इस वक्त मुझपर विश्वास करके चली जाओ।"

मैथिली गिरिनगर के लिए वापस रवाना हो गई। कीर्तिसेन मैथिली के साहस और दृढ़ता से बहुत प्रभावित हुए। मैथिली की सुन्दरता से भी वह आकृष्ट थे। उन्होंने अपने मन में उसी वक्त यह निश्चय कर लिया कि वासन्ती का समाचार

मिलने पर मैं मैथिली के साथ अवश्य विवाह कर लूँगा ।

उधर मैथिली ने घर लौट कर देखा कि वासन्ती घर पर है । वह संगीत कला विद्यालय के अपने एक सहपाठी के साथ एक मन्दिर में विवाह करके घर लौट आई थी । वासन्ती ने अपना विवाह इसलिए गुप्त रूप से कर लिया कि पहले सूचना देने पर उसकी बहन इस विवाह के लिए अपनी सम्मति न देती ।

नयी दंपत्ति को आशीर्वाद देकर मैथिली पुनः उसी समय राजधानी लौट गई और अपनी भूल को क्षमा करने के लिए राजा से निवेदन किया ।

राजा कीर्तिसेन हंस कर बोले— "इसमें क्षमा करने की कोई बात नहीं है । मैं तुम्हारे देश को छोड़ कर चला जा रहा हूँ । साथ ही मैं तुम्हारे राजा को यह गद्दी वापस सौंप रहा हूँ । मैथिली, तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है । इस के बदले में यह उपहार स्वीकार करो ।" यों कह कर उसको क़ीमती उपहार देकर वे मराल देश को वापस चले गए ।

बेताल ने यह कहानी सुना कर पूछा— "राजन, कीर्तिसेन के निर्णय के पूर्व के विचार क्या आश्चर्य जनक नहीं हैं ? जिसने भरे दरबार में उनका अपमान किया, उसके साथ विवाह करने का निर्णय कीर्तिसेन ने कैसे कर लिया ? फिर यह निर्णय करने के बाद उन्होंने अपना विचार क्यों बदल डाला ? सबसे बड़ी विचित्र बात तो यह है कि उन्होंने उज्ज्वल देश को जीतकर उसको त्याग दिया । क्या यह सब अविवेकपूर्ण नहीं है ? इस प्रश्न का सही उत्तर

जान कर भी न दे सकें तो आपका सर फूट कर टुकड़-टुकड़े हो जाएगा ।"

इस पर विक्रम ने यह उत्तर दिया—"कीर्तिसेन के निर्णय में आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। भरी सभा में राजा की आलोचना कर सकने वाली मैथिली के साहस पर मुग्ध होकर राजा ने उसके साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया । पर बाद को उन्हें अपने निर्णय की भूल मालूम हुई। वासन्ती के गायब हो जाने पर आगे-पीछे सोचे बिना उसने राजा पर संदेह किया था। यह आदत किसी साधारण स्त्री में हो तो कोई खतरे की बात नहीं है, पर रनिवास की नारी के लिए अवश्य खतरे का कारण बन सकता है । इसीलिए कीर्तिसेन ने मैथिली के साथ विवाह करने के अपने गिर्णय को बदल डाला ।

अब राज्य त्यागने की बात रही। यदि किसी देश का राजा दुष्ट या अत्याचारी होता है, तब शत्रु राजा उस राज्य पर अधिकार करके न्यायपूर्वक शासन करे तो जनता उसके प्रति श्रद्धा-भक्ति का परिचय देगी। पर कीर्तिसेन ने उज्ज्वल देश के जिस राजा को कारागार में डाल दिया था, वास्तव में वे न तो दुष्ट थे और न अत्याचारी ही ।

वे यथाशक्ति अकाल से अपने राज्य की रक्षा करने के प्रयत्न में लगे हुए थे। ऐसे व्यक्ति को सिंहासन से हटाने वाले पड़ोसी देश का राजा कभी उस देश की जनता के विश्वास एवं आदर का पात्र नहीं बन सकता । यह बात कीर्तिसेन ने उस समय भांप ली जब कि भरी सभा में उस पर मैथिली ने आरोप लगाया । इसीलिए उन्होंने पुनः वह राज्य विजय वर्मा को सौंप दिया । यह निर्णय अत्यंत विवेक और राजनैतिक जागरूकता के साथ लिया गया था। इसके द्वारा कीर्तिसेन की प्रतिष्ठा अपने राज्य में नहीं बल्कि पड़ोसी देशों में भी बढ़ने की संभावना थी !

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पुनः पेड़ पर जा बैठा ।

पद की कसौटी

कनक गुप्त महेन्द्रपुरी राज्य के कोषाध्यक्ष थे। जब कोषागार का काम बढ़ गया, तब कनक गुप्त ने मंत्री से अनुमति माँगी कि उसे दो सहायकों को नियुक्त करने का अधिकार दें। मंत्री ने कनकगुप्त की प्रार्थना मान ली और उन्हें प्रत्येक व्यक्ति को बारह मुद्राएं वेतन देने का आदेश दिया। पर कनकगुप्त ने दो के स्थान पर तीन व्यक्तियों को अपने सहायकों के रूप में नियुक्त कर लिया।

यह समाचार सुनकर मंत्री बहुत नाराज़ हो गए। पर उन्होंने इस संबन्ध में कनकगुप्त से कोई कैफ़ियत नहीं माँगी बल्कि राजा के पास जाकर शिकायत की— "प्रभु, हमारे कोशाधिपति कनकगुप्त ने कार्य के बढ़ जाने की बात बताकर दो और सहायकों को नियुक्त करने के लिए मेरी अनुमति माँगी, पर उन्होंने तीन व्यक्तियों को अपने सहायक के रूप में नियुक्त किया है।"

राजा ने कहा— "यह तो हमारे आदेशों का उल्लंघन हुआ है। यह तरीक़ा सही नहीं है।" इसके बाद राजा ने कनकगुप्त को बुलाकर इसकी कैफ़ियत माँगी।

"महाराज, मंत्री महोदय ने मुझे आदेश दिया था कि दो व्यक्तियों को अपने सहायक के रूप में नियुक्त करके प्रत्येक व्यक्ति को बारह मुद्राएँ वेतन दूँ। यह बात सही है, पर मैंने वेतन आठ मुद्राएँ देकर दो व्यक्तियों की जगह तीन व्यक्तियों को नौकरी दे दी है।" कोशाधिपति कनकगुप्त ने उत्तर दिया।

राजा ने उसकी ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा— "तुमने ऐसा क्यों किया ? यही बात जानने के लिए मैंने तुमको यहाँ पर बुला भेजा है। तुमने मंत्री के आदेश का उल्लंघन क्यों किया है ?"

कनकगुप्त ने विनयपूर्वक उत्तर दिया— "महाराज, मंत्री ने दो व्यक्तियों को मेरे पास

राजेन्द्रशर्मा

भेजा। पर उन व्यक्तियों का परिचय पाने के बाद मैंने सोचा कि एक और व्यक्ति सहायक के रूप में हो तो ज़्यादा उचित होगा।"

राजा ने डांटने के स्वर में कहा— "तुम जो कुछ बताना चाहते हो, सो साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते ?"

इस पर मंत्री ने दखल देते हुए कहा— "महाराज, मैंने जिन दो व्यक्तियों को भेजा है, वे अत्यंत ही विश्वास पात्र हैं। साथ ही समर्थ भी हैं। इसीलिए मैंने इन नियुक्तियों में थोड़ी रुचि ली है।"

"मंत्री महोदय, तुमने बहुत ही अच्छा किया, क्योंकि यह व्यवहार धन से संबन्धित है। कोशागार में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए ईमानदारी के साथ सामर्थ्य की भी आवश्यकता होती है।" यों कह कर राजा ने कनकगुप्त की ओर देखा।

"प्रभु, महामंत्री ने जिन पदों के लिए दो व्यक्तियों को मेरे पास भेजा है, उनमें एक महामंत्री के मित्र के पुत्र हैं और दूसरे महारानी के दूर के रिश्तेदार हैं।" कनकगुप्त ने कहा।

राजा यह उत्तर पाकर मुस्कुरा उठे और पूछा— "क्या तुम्हारी दृष्टि में ऐसे लोग कोशागार में छोटे पदों के योग्य नहीं होते ?"

"प्रभु, यह प्रश्न योग्यता से संबन्धित नहीं है। मैं ने सोचा कि ऐसे प्रभाव रखने वाले लोगों के द्वारा मैं कठोरता के साथ काम नहीं ले सकता। इसलिए मैंने एक साधारण व्यक्ति को भी वह पद दे दिया है। यह काम मैंने इस विचार से किया है कि ज़रूरत पड़ने पर उन दोनों का काम उस अकेले आदमी से ले सकूँ। फिर भी महामंत्री ने जो वेतन देने की अनुमति दी है इससे ज़्यादा न हो, इस बात का भी मैंने ख्याल रखा है।" कनकगुप्त ने कैफ़ियत दी।

राजा ने महामंत्री की ओर देखा। इस पर मंत्री ने लज्जित होकर चुपचाप अपना सर झुका लिया।

इसके बाद राजा ने यह आदेश निकाला कि कार्य को दृष्टि में रख कर बिना पक्षपात के योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करें।

मध्यम मार्ग

अमला ज़रूरत से भी कम बोलने वाली महिला थी । विवाह के बाद जब वह ससुराल आई, तब उसने अनुभव किया कि उसका पति आदित्य छोटी-सी बात को लेकर भी आवश्यकता से अधिक बात करता है । यह आदत उसे अच्छी न लगी । प्रारम्भ में उसने अपने पति को मीठे शब्दों में समझाया, लेकिन कोई असर नहीं हुआ । तब उसने उसे रुखाई से भी समझाया लेकिन फिर भी आदित्य की बातचीत में कोई परिवर्तन नहीं आया । इससे निराश होकर अमला ने न सिर्फ़ अपने पति के साथ बल्कि अन्य रिश्तेदारों के साथ भी 'हाँ'-'नहीं' से अधिक बात करना बन्द कर दिया ।

एक बार अमला को अपनी सहेली की शादी में शहर जाना पड़ा । यह खबर मिलते ही आदित्य ने उसे समझाना शुरू किया— "तुम्हें सहेली की शादी में अवश्य जाना चाहिये । परिवार से भी बड़ा सम्बन्ध मित्र का होता है । मित्रता में स्वार्थ के लिए कोई स्थान नहीं होता । वास्तव में कठिनाई में मित्र ही काम आते हैं, सम्बन्धी तो अवसर देख कर सिर्फ़ लाभ उठाने की ताक में रहते हैं । विवाह जीवन का एक प्रमुख उत्सव है । इसलिए ऐसे महत्वपूर्ण अवसरों पर मित्र के यहाँ जाना बहुत ही आवश्यक है ।"

अमला यह भाषण सुन कर खीझती हुई बोली— "इतनी रामायण सुनाने की आवश्यकता क्या थी ? सिर्फ़ इतना ही कह देते— "हो आओ ।" और इतना कह कर अमला शादी के लिए शहर चली गई ।

सहेली के घर जाकर अमला ने थोड़ी देर उससे बातचीत की और अकेले ही, किसी से मिले और बातचीत किये बिना ही, शादी के रस्म-रिवाज़ देखती रही ।

कुछ स्त्रियों ने कानाफूसी भी की— "देखो

गुलाब सिंह

तो सही ! अमला कितनी घमण्ड़ी है। किसी से बात तक नहीं करती। शायद वह दूसरों के साथ बात करना अपनी हैसियत के खिलाफ़ समझती होगी।" अमला ने भी यह बात सुनी, लेकिन फिर भी उसने किसी की परवाह नहीं की।
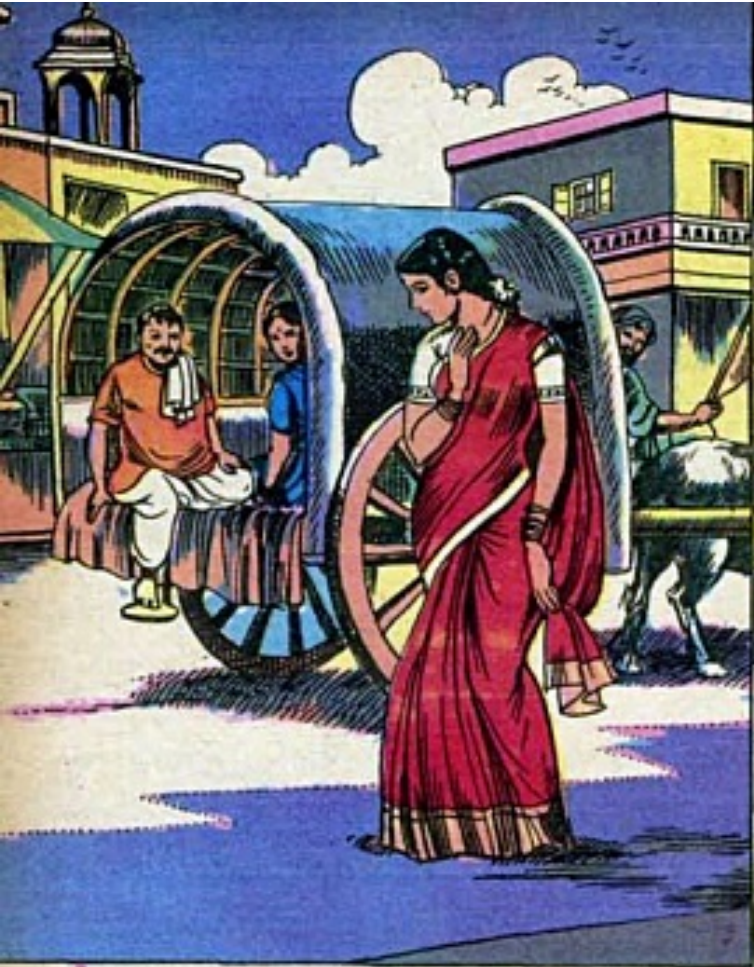
भोज के बाद अमला अपनी सहेली से विदा लेकर किराये की गाड़ी की खोज में चौक पर आई। तभी उसकी पड़ोसिन कमला और उसके पति कहीं से आते हुए गाड़ी में दिखाई पड़े। उन लोगों ने अमला को वहाँ खड़ी देख कर गाड़ी रोक दी। लेकिन अमला ने इन लोगों को देख कर अपना मुहँ दूसरी तरफ़ फेर लिया, मानों उन्हें देखा ही न हो। कमला और उसके पति को यह बात बहुत बुरी लगी। इसलिए वे फिर अमला से बात तक किये बिना अपने रास्ते चले गये।

अमला बहुत देर तक चौक पर खड़ी रही, किन्तु उसे कोई गाड़ी नहीं मिली। सूर्यास्त होनेवाला था, तब उसे एक गाड़ी दिखाई पड़ी। वह भी दुगुने किराये पर अमला के गाँव जाने पर राज़ी हुआ। अभी अमला घर पहुँची भी न थी कि अन्धेरा हो गया। उस रास्ते पर आने-जानेवाला कोई दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक एक सुनसान जगह पर गाड़ीवान ने गाड़ी रोक दी।

"क्या हुआ ? तुमने गाड़ी क्यों रोक दी ?" अमला ने घबरा कर पूछा।

इस पर गाड़ीवान ने अपनी जेब से एक चाकू निकालते हुए कहा— "गाड़ी से उतर कर अपने गले की माला और बटुआ चुपचाप मेरे हवाले कर दो।"

अमला यह फटकार सुन कर हक्का-बक्का सी हो गई, उसके चेहरे पर मानों काटो तो खून नहीं फिर वह काँपती हुई गाड़ी से नीचे उतरी और अपने सौ रुपये गाड़ीवान के हाथ में सौंप दिये।

"माला भी निकालो।" गाड़ीवाला गरज कर बोला।

अमला अपने काँपते हाथों से माला निकालने ही लगी कि तभी उसे शहर की ओर तेजी से जाने वाली एक गाड़ी दिखाई पड़ी। इस

पर गाड़ीवाले ने घबराहट में अमला के गले की माला जोर से खींच ली, जिससे वह टूट कर नीचे गिर गई। गाड़ी वाले को अन्धेरे में माला ढूँढने का साहस नहीं हुआ इसलिए वह जल्दी से अपनी गाड़ी लेकर शहर की ओर चला गया। ज़मीन पर गिरी माला को अपने आंचल में उठा कर अमला उस अंधेरी रात में पैदल ही अपने गाँव पहुँची।

अमला से सारी बातें सुन कर आदित्य अपना सिर पीटता हुआ बोला— "तुमने भी कैसी बेवकूफ़ी की ? कमला से बात करके उसके साथ आ जाती तो यह नौबत ही नहीं आती ! मैंने पहली गलती यह की कि मैंने तुम्हें अकेली ही शहर भेज दिया। दूसरी गलती यह कि सौ रुपये भी दिये और तीसरी यह कि सोने की माला बनवा कर दी।....." इस प्रकार आदित्य कुछ और कहने जा रहा था। तभी उसे रोकते हुए अमला बोली— "मैं फ़ुरसत से तुम्हारी गलतियों की सूची बना दूँगी। अभी तो उस टूटी हुई माला को अपनी दुकान से जुड़वा कर ले आओ।"

आदित्य उस गाँव के सबसे बड़े जौहरी की दुकान में कर्मचारी था। सौ रुपये खो जाने की चिन्ता में उसका मन बेचैन था, इसलिए दुकान जाते समय अपने साथ माला ले जाना भूल गया।

उस दिन आदित्य की दुकान पर गहने खरीदने के लिए एक गंजा आया। आदित्य ने उसे तरह-तरह के गहने दिखाये। फिर गंजे ने कुछ नयी किस्म की मालाएँ दिखाने के लिए कहा।

आदित्य ने अनेक प्रकार की मालाएँ दिखा कर उनकी कारीगरी का बखान किया। इस पर गंजा थोड़ा चिढ़ता हुआ बोला— "मैं कोई अन्धा और बहरा नहीं हूँ। एक ही बात को बार-बार दुहराने की जरूरत नहीं है। ये सब मालाएँ मोटी हैं। क्या पतली और नाजुक मालाएँ तुम्हारे पास नहीं हैं ?"

इस पर आदित्य ने पतली माला का दोष बताते हुए कहा— "बुरा न मानियेगा, वास्तव में मूर्ख लोग ही पतले और नाजुक़ हार खरीदते हैं। जानते हैं, कल क्या हुआ ?" यह कह कर आदित्य ने अपनी पत्नी के साथ घटी सारी घटना सुना दी। और फिर कहा— "हार पतला था, इसीलिए खींचते ही टूट गया। मेरी पत्नी ने उसे जुड़वा कर लाने को कहा था, लेकिन मैं उसे दुकान पर लाना भूल गया। अन्यथा मैं जरूर आप को दिखा देता।"

गंजा खीझता हुआ बोला— "मोटे-मोटे हार तो डाकुओं और चोरों के लिए और भी आकर्षक लगेंगे। तुम्हारी दुकान में पतले हार न हों तो साफ़-साफ़ पहले ही बता देना चाहिये, लेकिन अपने घर का सारा पुराण क्यों मुझे सुनाते हो ?"

और यह कह कर वह दुकान से बाहर चला गया।

शाम को आदित्य जब घर वापस आया तब अमला ने पूछा— "क्या माला जुड़वा कर ले आये ?"

"आज मैं उसे दुकान ले जाना बिलकुल भूल गया था। कल जाते समय याद दिला देना।" आदित्य ने कहा।

अमला ने चकित होकर पूछा— "क्या माला तुम्हें नहीं मिली ?"

बात यह हुई कि दुपहर के समय एक आगन्तुक ने आदित्य के मकान का दरवाजा खटखटाया। अमला के किवाड़ खोलते ही उस आगन्तुक ने कहा— "साहब अपने साथ टूटी हुई माला ले जाना भूल गये हैं, इसलिए मुझे लाने को भेजा है। यह तो अच्छा हुआ कि गाड़वाले ने आप की कोई और हानि नहीं की।"

आगन्तुक ने इस प्रकार बात की जैसे वह उस घर की हर बात जानता हो और बड़ा विश्वास पात्र हो। इसीलिए अमला ने बिना शक किये उसे टूटी हुई माला दे दी।

"लेकिन उस व्यक्ति को मेरे घर की यह घटना कैसे मालूम होगी ? और तुमने भी बिना पूछताछ किये उसे माला कैसे दे दी ?" आदित्य ने अमला को डाँटते हुए पूछा।

अचानक कुछ याद करते हुए उसने फिर पूछा— "क्या वह व्यक्ति गंजा सिर था ?"

"हाँ हाँ, उसका सिर गंजा था।" अमला ने उत्तर दिया।

"हाँ, मैंने दुकान पर एक गंजे ग्राहक को बातचीत के सिलसिले में यह सारी घटना बता दी थी। लेकिन यह नहीं मालूम था कि वह चोर होगा।" आदित्य ने अपनी करनी पर पछताते हुए कहा।

"हद से ज़्यादा बकवास करने से यही होता है ! आखिर हर ऐरे गैरे नत्थू खैरे को घर का मामला सुनाने का क्या फ़ायदा !" अमला गुस्से में बड़बड़ाने लगी।

तभी वहाँ पर उनकी नौकरानी गंगा बाई आ गई और उनकी बातचीत सुन कर बोली— "आप लोग यदि नाराज़ न हों तो मैं एक छोटी-सी बात बताऊँ ? मालकिन कम बोलने की आदत के कारण सौ रुपये गँवा बैठीं और खतरे में पड़ गईं। मालिक ज्यादा बोलने की आदत के कारण हार खो बैठे। मालकिन ने मुझे इसलिए काम पर रखा है कि मैं कम बोलती हूँ, लेकिन पड़ोसिन कमला ने यही सोच कर अपने यहाँ रखा है कि उनके पूछते ही मैं सारे मुहल्ले के समाचार उन्हें सुना देती हूँ। इससे मेरी दोनों ही मालकिनें मुझे पसन्द करती हैं। यानी बातचीत उतनी ही करनी चाहिये जितनी कि वहाँ पर आवश्यकता हो- न कम, न अधिक।"

नौकरानी गंगा बाई पढ़ी-लिखी न थी, फिर भी अनुभव के आधार पर उसने जो कुछ कहा, उसमें अमला और आदित्य को सच्चाई ही सच्चाई नज़र आई। और दोनों ने अपनी-अपनी भूल स्वीकार की।
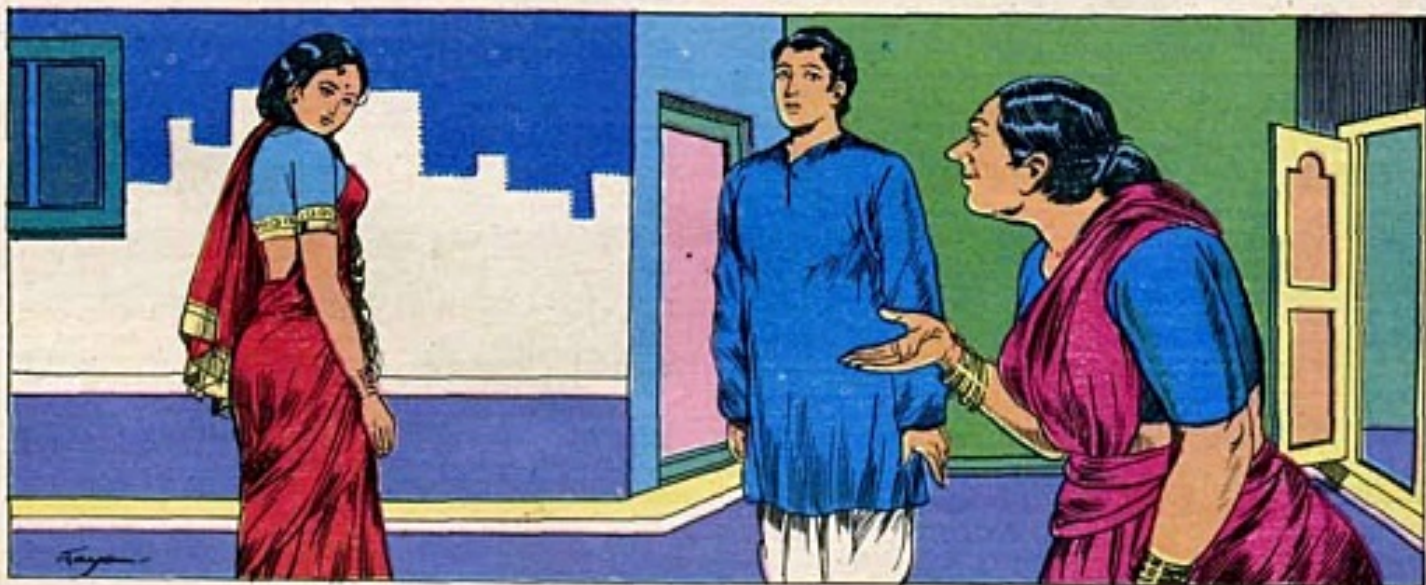
टूटी गाड़ी-छाछ की झारी

एक समय काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त का शासन था। युक्तवयस्क होने पर वह बहुत अहंकारी और कठोर हो गया। बूढ़े मनुष्यों और पशुओं तथा पुरानी चीज़ों से उसे घृणा थी। कोई भी बूढ़ा पशु-हाथी, घोड़ा, कोई अन्य जानवर या पुरानी वस्तु पर उसकी नज़र पड़ जाती तो फौरन उसे नष्ट करने की आज्ञा दे देता।

यदि कोई वृद्ध व्यक्ति उसके सामने पड़ जाता तो वह उसकी सफ़ेद दाढ़ी पकड़ कर खींच लेता। ऐसे लोगों को नीचे लिटा कर बर्तनों की तरह लुढ़का देता। यहाँ तक कि बूढ़ी स्त्रियों को भी अनेक प्रकार से सताया करता।

ब्रह्मदत्त की इन अर्थहीन करतूतों और अत्याचारों की कोई हद न थी। प्रजा बेहद दुखी और परेशान थी। वे लोग राजा के डर से अपने वृद्ध माता-पिताओं को दूर देशों में छोड़ आये थे और उनसे दूर रह कर दुखी रहते थे। इस प्रकार माता-पिता को अपने घरों से निकाल देने के कारण वे पाप के भागीदार बन गये। ऐसे पापियों से नरक भरने लगे, किन्तु स्वर्ग लोक खाली रहने लगा।

उस समय स्वर्ग के अधिपति इन्द्र का पद बोधिसत्व को प्राप्त था। स्वर्ग में किसी को न आते देख इन्द्र बहुत चिन्तित हुए। अन्त में इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने एक उपाय सोचा।

अपनी योजना के अनुसार बोधिसत्व ने एक निर्धन वृद्ध का रूप धारण किया। इसके बाद एक टूटी-फूटी गाड़ी में दो झारियों में छाछ भर कर रख दिया। फिर दो दुबले-पतले बूढ़े बैलों को उस गाड़ी में जोत कर काशी के राजपथ पर चल पड़े।

बोधिसत्व इस प्रकार आगे बढ़े चले जा रहे थे। तभी दूसरी ओर से अत्यन्त वैभव पूर्ण और भव्य जुलूस के साथ हाथी पर सवार होकर राजा ब्रह्मदत्त सामने आते दिखाई पड़े। उस दिन राजा

(जातक कथा)

के लिए सारा नगर विशेष रूप से सजाया गया था। नगर की शोभा देखते ही बनती थी। लगता था स्वर्ग की अलकापुरी पृथ्वी पर उतर आई है।

टूटी-फूटी गाड़ी पर एक वृद्ध को अपने सामने आते देख राजा ब्रह्मदत्त क्रोध में गरजने लगे— "अरे कम्बख़्त ! हट जाओ मेरी नज़र से ! अरे दुष्ट ! तुमने मेरे सामने आने की कैसे हिम्मत की ?"

राजा को इस प्रकार अकारण पागलों की तरह चिल्लाते देख राजा के अधिकारियों और मार्ग के दोनों ओर खड़े नागरिकों को बहुत आश्चर्य हुआ। वे मन ही मन सोच रहे थे— "राजा इस प्रकार अकारण क्यों चिल्ला रहे हैं ?"

बात यह थी कि वृद्ध के रूप में बोधिसत्व केवल राजा को ही दिखाई दे रहे थे। वहाँ उपस्थित लोगों में से कोई भी अन्य व्यक्ति उन्हें नहीं देख पा रहा था। बोधिसत्व ने जान-बूझ कर यह माया फैलायी थी। इसीलिए सभी लोग उस समय अपने राजा को पागल समझ रहे थे।

जब राजा क्रोध से चिल्ला रहे थे तभी बोधिसत्व ने उसके पास आकर छाछ की एक झारी उसके सिर पर पटक दी। इससे राजा डर गया और अपने हाथी को हाँक कर भागने लगा। उसी समय बोधिसत्व ने छाछ की दूसरी झारी भी उसके सिर पर दे मारी। छाछ से राजा का शरीर भीग गया। राजा क्रोध और भय से काँपने लगा।

राजा अपने सामने देवताओं के अधिपति साक्षात् इन्द्र को वज्रायुध के साथ देख कर भयभीत हो गया और उनके चरणों में गिर पड़ा।

तभी राजा की आँखों के सामने से गाड़ी अदृश्य हो गई और छाछ की झारियाँ भी दिखाई नहीं पड़ीं। और सामने खड़े थे इन्द्र अपने दिव्य रूप में।

तब इन्द्र के रूप में बोधिसत्व बोले— "बताओ राजा ! कौन घमण्डी है-तुम या मैं ? आँखों के सामने मद के छाने पर कौन अन्धा हो गया-तुम या मैं ? क्या तुम सदा युवा बने रहोगे ? क्या तुम्हें वृद्धावस्था नहीं आयेगी ? वृद्धों और पुरानी वस्तुओं से घृणा क्यों करते हो ? क्या तुमने यह जानने की कोशिश की कि

तुम्हारे अत्याचारों से प्रजा कितनी पीड़ित है ! तुम्हारी यातनाओं से डर कर लोगों ने अपने पूजनीय माता-पिता को घर से निर्वासित कर दिया है और इस कारण वे पापी बन गये हैं। इस तरह तुम्हारे राज्य में पापियों की संख्या बढ़ गई है और उनसे नरक भरते जा रहे हैं। क्या यह सब तुमने जानने-समझने की कोशिश की ? तुम्हारे राज्य का कोई भी व्यक्ति स्वर्ग का अधिकारी नहीं रहा ।

"वास्तव में राजा को चाहिए कि वह अपनी प्रजा को अपनी संतान के समान माने और हर प्रकार से उनकी सुख-सुविधा का ख्याल रखे। पर तुमने प्रजा के हित के कोई कार्य नहीं किए, उल्टे उन की संपत्ति बटोर कर ऐश आराम करते हो और तिसपर भी उन्हें सता रहे हो।

यहाँ तक कि दुष्ट लोग अध्याचार करने पर भी अपने वृद्ध माता-पिताओं के साथ अच्छा बरताव करते हैं। तुम उन दुष्ट लोगों से भी कहीं ज़्यादा गये बीते हो ? तुम जैसे लोगों के अत्याचारों से डर कर निरीह जनता विद्रोह भी नहीं कर पा रही है। लेकिन याद रखो कि तुम्हारे व्यवहार में कोई परिवर्तन न आया तो एक न दिन तुम्हारी प्रजा तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह कर बैठेगी !

"इसलिए अभी से इस मूर्खता को छोड़ कर सच्चे मार्ग का अनुसरण करो, अन्यथा मेरा यह वज्रायुध तुम्हारे सिर को धड़ से अलग कर देगा । सावधान ।" इस तरह चेतावनी देकर बोधिसत्व अदृश्य हो गये ।

उसी दिन से ब्रह्मदत्त के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आ गया । वह वृद्धों का आदर करने लगा । लोगों ने राजा में यह परिवर्तन देख कर दूर देशों से अपने माता-पिता को बुला लिया और यथा शक्ति उनकी सेवा कर सुखपूर्वक जीवन यापन करने लगे। प्रजा सुख और शान्ति से रहने लगी ।

लेकिन किसी ने बोधिसत्व को नहीं देखा था, इसलिए अधिकारियों और प्रजा में बराबर यह रहस्य बना रहा कि राजा में यह अचानक परिवर्तन कैसे आया ।
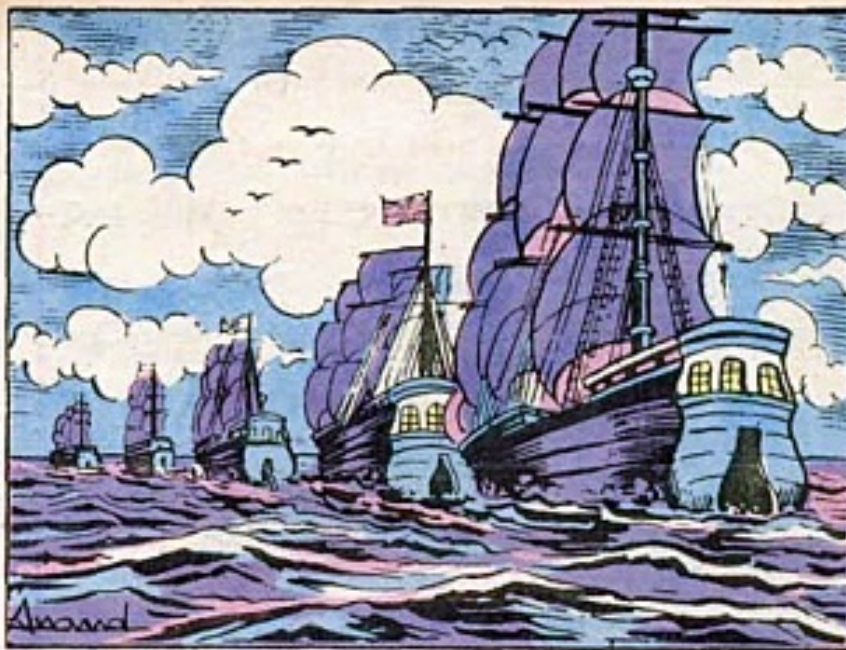
कम्पनी का युग

अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ब्रिटिश ईस्ट ईण्डिया कम्पनी धीरे-धीरे भारत पर अपना अधिकार जमाने लगी। ब्रिटिश व्यापारी जहाज़ भर-भर कर भारत आने लगे। लेकिन भारत का माल ब्रिटिश माल से किसी हालत में घटिया न था। इसलिए ब्रिटिश माल की अधिक मांग न रही।

इस कारण से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारी हमारे देश के कुशल बुनकरों के घरों पर छापा मार कर उनके करघे नष्ट करने लगे और उन्हें मार-पीट कर विकलांग भी बनाने लगे। इस प्रकार कम्पनी के व्यापारियों ने अपने प्रति द्वन्द्वियों को मार्ग से हटाने का प्रयत्न किया।
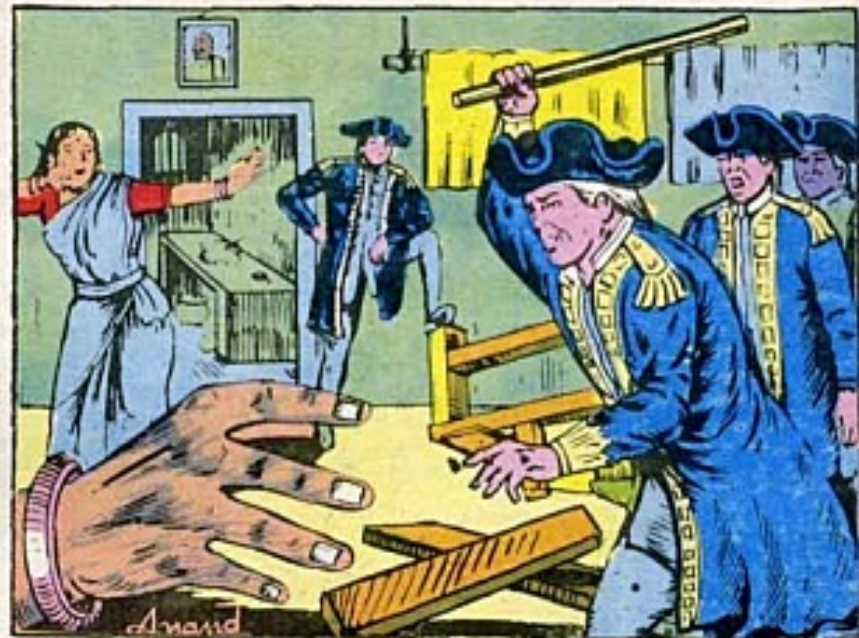
कम्पनी ने कुछ प्रदेशों में नील की फसल बोकर आस-पास के मजदूरों को काम पर लगाया। फिर, उनसे काम लेने के बाद बिना मजदूरी दिये जानवरों की तरह मार पीट कर उन्हें भगा दिया।

कम्पनी की सरकार गलत युक्तियों और षड्यंत्रों के द्वारा हमारे देश के छोटे-मोटे जमीन्दारों और राजाओं से अधिकार और ज़मीन-जायदाद हड़पने लगी। इस प्रकार कम्पनी केवल एक व्यापारिक संस्था न रह कर एक भारी जमीन्दार के रूप में परिणत हो गई।

कम्पनी ने वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया। बंगाल के राजा नन्दकुमार ने वारेन हेस्टिंग्स की रिश्वतखोरी के बारे में उच्चाधिकारियों से शिकायत कर दी। लेकिन उस समय का न्यायाधीश हेस्टिंग्स का मित्र था। इसलिए नन्द कुमार पर जाली हस्ताक्षर का आरोप लगा कर उसे फाँसी की सज़ा दे दी गई।

तीर्थाटन करने वाले कुछ साधुओं पर ब्रिटिश कम्पनी ने कर लगा दिया, जिससे साधु संन्यासियों ने कम्पनी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस प्रकार ब्रिटिश शासन का विरोध करने वालों में साधु- संन्यासी प्रथम पंक्ति में थे।

भवानी पाठक तथा देवी चौधरानी ने इस विद्रोह में साधुओं का नेतृत्व किया। नौका पर ही अपना घर बना कर रहने वाली साहसी वनिता चौधरानी ने छोटी नौकाओं में चलने वाले वीरों का नेतृत्व कर असाधारण शौर्य का परिचय दिया।

देवी चौधरानी के वीर साधु-संन्यासी कम्पनी के जहाज़ों पर अचानक हमला करके और उन्हें डुबा कर अपनी नावों से जंगलों में बहने वाली नदियों से होकर भाग जाते थे।

साधुओं के विद्रोह के बाद पूर्व मध्य भारत के किसानों ने कम्पनी की सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लेकिन कम्पनी ने उस विद्रोह को बन्दूक़ से दबा दिया। इस प्रकार कम्पनी की जड़ें गाँवों में भी जमने लगीं।

फिर भी कम्पनी का विस्तार बहुत आसानी से नहीं हो पाया। कर्नाटक में कित्तूर का राजा वारिस के रूप में अपने दो पुत्रों को छोड़ कर स्वर्ग वासी हो गया। रानी चेन्नम्मा ने उन नाबालिग बच्चों की ओर से बड़ी समर्थता पूर्वक शासन किया।

दुर्भाग्यवश दोनों राजकुमारों का देहान्त हो गया। बड़े युवराज का एक दत्तपुत्र था, फिर भी कम्पनी ने कित्तूर राज्य को लावारिस घोषित कर दिया। राज्य पर अधिकार करने के लिए कम्पनी ने सेना भेजी, जिसका रानी चेन्नम्मा ने डट कर सामना किया।
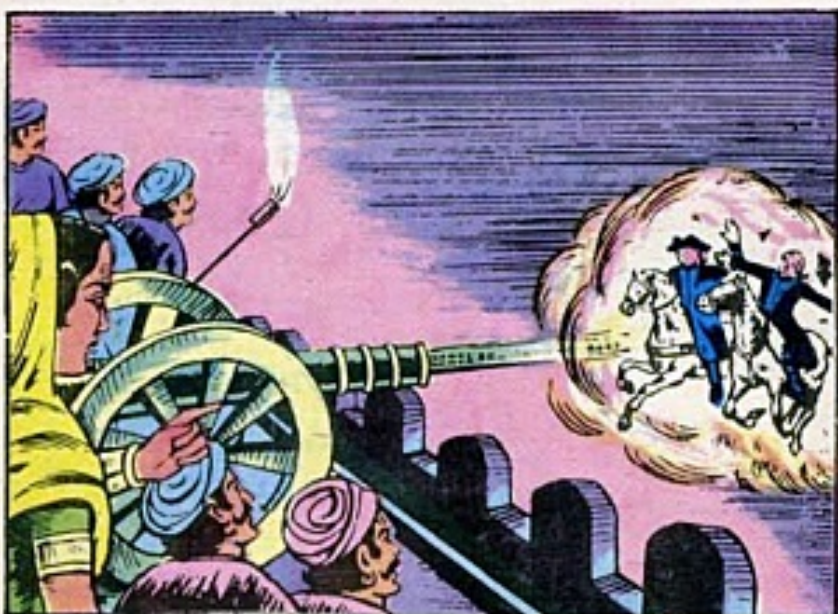
रानी के सैनिकों ने दुर्ग के ऊपर के तोपों से भारी गोलों की वर्षा करके ब्लाक और डिण्टन नामक ब्रिटिश सेनापतियों को खत्म कर दिया और कम्पनी के प्रतिनिधि थाकरे को भी मार डाला। सन् १८२४ के युद्ध में कम्पनी हार गई लेकिन बाद में रानी चेन्नम्मा बन्दी बना ली गई। फिर भी विद्रोह की अग्नि जो सुलग गई थी, वह ठंढी नहीं हुई।

तीन वरदान

रुद्रपुर नाम का एक गाँव था। वहाँ एक चरवाहा रहता था — गोविन्द। पूर्णिमा उसकी पत्नी थी। वह बहुत ही समझदार और बुद्धिमती थी। गोविन्द भी इस बात को मानता था। इसीलिए वह हर काम पत्नी की सलाह से ही किया करता था।

दोनों की कुल सम्पत्ति के नाम पर अपना मकान के अतिरिक्त दो दूधारू गायें थीं। गोविन्द रोज अपनी गायों को चराने के लिए जंगल ले जाया करता।

जंगल में एक पेड़ के नीचे एक मुनि ध्यान में बैठे रहते। गोविन्द ने मुनि को कई बार देखा था लेकिन वह कभी उनके पास गया नहीं था।

एक दिन जब गोविन्द अपनी गायें चरा रहा था, कि अचानक भयंकर आँधी आ गई। और फिर जोरों से वर्षा होने लगी। गोविन्द आँधी और वर्षा के कारण अपनी गायों को लेकर वापस घर आने लगा। जब वह मुनि की कुटिया के पास पहुँचा तो वहाँ मुनि को न देख कर उसे आश्चर्य हुआ। कुटिया के पास के कई वृक्ष आँधी में उखड़ गये ये और कई वृक्षों की शाखाएँ टूट कर बिखर गई थीं। गोविन्द ने टूटे हुए वृक्षों के पास जाकर देखा तो टूटी हुई शाखाओं के नीचे मुनि अचेत पड़े थे। गोविन्द ने शाखाओं को हटा कर मुनि को निकाला और उन्हें उठा कर कुटिया में ले गया। तभी मुनि ने आँखें खोलीं मानों उनका ध्यान अभी टूटा हो, और सहज जिज्ञासा से पुछा — "तुम कौन हो बेटा और क्या चाहते हो ?"

गोनिन्द ने आंधी-वर्षा में पेड़ों के टूटने और टूटी हुई शाखाओं के नीचे से मुनि को निकाल कर लाने का सारा हाल बताते हुए कहा — "आप का तपोबल महान है महात्मा ! इतने भारी डालों के गिरने पर भी आप के शरीर पर छोटा-सा खरोंच तक नहीं आया। मुझे यह देख बड़ा आश्चर्य होता है।" इतना कह कर गोनिन्द

कुमारी सविता

ने जाने की मुनि से आज्ञा माँगी ।

मुनि ने उसे रोकते हुए कहा — "ऐसा मालूम होता है कि प्राणिमात्र पर तुम दया भाव रखते हो । मैं तुम्हारे इस गुण पर प्रसन्न होकर तुम्हें तीन वरदान देता हूँ । तुम कुछ भी माँग लो ।"

गोविन्द थोड़ी देर तक सोचता रहा पर उसकी समझ में नहीं आया कि क्या माँगे । तब उसने मुनि से कहा — "महात्मा ! मैं अपनी पत्नी से पूछ कर आता हूँ । मुझे नहीं पता चल रहा है कि मैं आप से क्या मागूँ, क्या न मागूँ !"

"ऐसा ही करो, लेकिन तुम्हें वापस आने की आवश्यकता नहीं होगी । तुम पत्नी से पूछ कर अपने मन में जिन तीन वरों की कामना करोगे, वे तुरन्त प्राप्त हो जायेंगे ।" मुनि ने समझा कर कहा ।

गोविन्द बड़ी खुशी के साथ घर लौटा और आदि से लेकर अन्त तक सारा हाल अपनी पत्नी को बताया ।

पूर्णिमा ने ध्यान से गोविन्द की बात सुनी और बहुत सोच-विचार कर कहा— "वैसे तो हमें जो कुछ प्राप्त है, उसी से हम सुख पूर्वक जीवन कर सकते हैं किन्तु मुनि से प्राप्त वरदान को अस्वीकार करना भी उचित नहीं है । इसलिए तीन वर के रूप में एक झाड़ू, एक लाठी और एक पगहा माँग लो । ये तीनों हमारे लिए काफी हैं ।"

गोविन्द ने सोचा कि इतने बड़े तपस्वी के वरदान के रूप में इतनी तुच्छ वस्तुएं माँगना ठीक नहीं होगा । फिर भी अपनी पत्नी की बुद्धि पर उसे पूरा भरोसा था । इसलिए उसकी सलाह के अनुसार ही उसने तीन वर माँग लिये ।

दूसरे ही क्षण वे तीनों वस्तुएँ वहाँ पर प्रकट हो गईं । पूर्णिमा ने उसी वक्त लाठी अपने पति के हाथ में दे दी, पगहे से गायों को बाँध दिया और स्वयं झाड़ू लेकर घर की सफाई में जुट गई ।

दूसरे दिन गोविन्द पुनः अपनी गायों को लेकर जंगल में गया । मुनि उस समय अपनी कुटिया के आस पास की भूमि से आँधी में टूटी हुई शाखाएं हटा रहे थे । उन्होंने गोविन्द को देखते ही मुस्कुराते हुए पूछा— "क्या तुमने अपने तीन वर माँग लिये ?"

गोविन्द ने मुनि को प्रणाम करके कहा—

"जी हाँ महात्मा ! मैंने तीन वरदान के रूप में एक झाड़ू, एक लाठी और अपनी गायों के लिए एक पगहा माँग लिया है ।"

यह सुन कर मुनि को आश्चर्य हुआ । उन्होंने पूछा— "जिन तीन वरदानों के लिए मैंने अपना सारा तपोबल त्याग दिया, तुमने उसके बदले इतनी साधारण वस्तुओं की कामना की ! यह कैसी विचित्र बात है ! मेरी समझ में नहीं आता कि इसके पीछे तुम्हारा उद्देश्य क्या है ! मैंने देर तक इस बारे में विचार किया कि आख़िर तुमने इन साधारण चीज़ों की मांग क्यों की ? वैसे साधारणण लोग अपने मन में तरह-तरह की अनेक कामनाएं रखते हैं, वे धन-संपत्ति और वैभव की कामना करते हैं फिर भी उन से सन्तुष्ट नहीं हो जाते ! बराबर यही सोचा करते हैं कि संसार का सारा वैभव और सुख-संपत्ति उन्हें प्राप्त हो! इसके बावजूद भी उनका लालच बना रहता है । शायद तुम नहीं जानते कि आज तक मैं ने तपस्या के द्वारा जो शक्ति और महिमाएं प्राप्त कीं, वह सारी तपस्या तुम्हारे इन वरदानों के लिए अर्पित की है! इसलिए मुझे आश्चर्य होता है ! मैं तुम्हारे मुँह से इस का वास्तविक कारण जानना चाहता हूँ ! बताओ, ये चीज़ें तुमने क्यों मांगी ?"

"महात्मा ! मैं सारा काम पत्नी की सलाह से ही करता हूँ और उसीने इन वरदानों का सुझाव दिया है ।" गोविन्द ने बड़े सरल भाव से उत्तर दिया ।

यह उत्तर सुन कर मुनि के मन में यह जानने की जिज्ञासा पैदा हुई कि आखिर गोविन्द की

पत्नी ने इतनी साधारण वस्तुओं की कामना का सुझाव क्यों दिया ? क्या इसके पीछे कोई रहस्य है या उसका अज्ञान है ?

यह जानने के लिए मुनि स्वयं गोविन्द के घर पहुँचे और पूर्णिमा से पूछा— "बेटी ! मैंने तुम्हारे हित की कामना से जो वर दिये, उनका उपयोग तुमने इतनी तुच्छ चीजों के लिए क्यों किया ? किसी बहुमूल्य वस्तु की कामना करती या सम्पत्ति मांगती तो वह तुम्हारे लिए अधिक उपयोगी होती ।"

पूर्णिमा ने चरण छूकर मुनि को प्रणाम किया और विनयपूर्वक कहा— "महात्मा ! आप के वरदान से निस्सन्देह बहुत सम्पत्ति प्राप्त हो सकती थी किन्तु अचानक और बिना परिश्रम प्राप्त सम्पत्ति चिन्ता का कारण बन जाती है और हित कारक कम तथा हानिकारक अधिक हो जाती है ।"

मुनि ने कहा— "यह बात ठीक है, फिर भी ऐसा लगता है जैसे तुम्हारी इस कामना के पीछे कुछ रहस्य है ।"

"महात्मन ! वास्तव में ये छोटी चीज़ें नहीं हैं जैसे कि आप समझते हैं । आप के तपोबल से प्राप्त यह झाड़ू साधारण झाड़ू नहीं है । इससे घर में स्वच्छता और पवित्रता बनी रहेगी और जहाँ पवित्रता होगी, वहीं लक्ष्मी का वास होगा ।

"आप की कृपा से प्राप्त लाठी विपत्ति के समय हमारे लिए एक दिव्य रक्षा-कवच बन जायेगी ।"

"तथा आप के प्रसाद के रूप में प्राप्त पगहा हमारे पशुधन रूपी गायों को हमारे घर से अलग नहीं होने देगा और हमारा घर गोरस से भरा रहेगा । इस प्रकार आप के वरदानों के प्रभाव से हमें जीवन भर कभी कोई अभाव न रहेगा ।" पूर्णिमा ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा ।

पूर्णिमा की बुद्धिमत्ता पर मुनि बड़े प्रसन्न हुए । उन्होंने उस दम्पति को हृदय खोल कर आशीर्वाद दिया और अपनी कुटिया में लौट गये ।

जब सूरज पश्चिम में उगा

राज्याभिषेक के पूर्व युवराजा का देशाटन करना चन्दन देश की परम्परा थी। इसी परिपाटी के अनुसार युक्त व्यस्क प्रताप वर्मा देशाटन करते हुए जब एक गाँव की सीमा पर पहुँचा तब उसके पैर में एक काँटा चुभ गया और खून बहने लगा। युवराजा प्रताप वर्मा वहीं पर लुढ़क गया। कुछ उपाय उसे समझ में न आया, इसलिए वह कातर दृष्टि से इधर-उधर ताकने लगा।

उस समय सुहासिनी नाम की एक किसान-कन्या मेहन्दी का पत्ता तोड़ने के ख्याल से वहाँ पर पहुँची। वह प्रतापवर्मा की हालत देख रहम करके उसके पास पहुँची और समीप में पड़े एक और काँटा लेकर युवराजा के पैर में गड़े काँटे को निकाल दिया। इसके बाद समीप के एक पेड़ के पत्ते का रस निचोड़ कर और अपनी साड़ी के आंचल से कपड़ा फाड़ कर घाव पर पट्टी बांध दी।

प्रताप वर्मा ने अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए उस युवती से कहा— "तुमने मेरी जो सहायता की वह आजीवन याद रखूँगा। बदले में तुम मुझसे जो कुछ पाना चाहती हो, माँग लो।"

सुहासिनी परिहास पूर्वक हंस कर बोली— "सबसे पहले तुम अपने पैर में गड़े काँटे को स्वयं निकालने का तरीक़ा सीख लो। तब तुम मेरे बारे में सोच सकते हो। जो अपना काम खुद नहीं कर पाता, वह दूसरों की क्या मदद कर सकता है?"

प्रतापवर्मा मुस्कुराकर बोला— "आज तक मुझे ऐसे काम सीखने की कोई आवश्यकता न पड़ी। हमेशा कोई न कोई मेरी सेवा किया करता रहा है। लेकिन कम से कम इस वक्त तो सीख लेता, लेकिन इस बार तुम पहुँच गई।"

"तुम तो बात ऐसे करते हो, मानो इस देश

रघुनाथप्रसाद

रानी बनाऊँगा ।"

युवराजा की बातें सुनकर सुहासिनी जरा भी विचलित न हुई और दृढ़ होकर बोली— "सुन्दर युवतियों को देखते ही कुछ लोगों के मन में झूठ बोलने की इच्छा पैदा हो जाती है। अगर तुम सचमुच राजा हो मैं यह बात भी जान सकती हूँ ।"

"तुम कैसे जान सकोगी ?" प्रताप वर्मा ने पूछा ।

"तुम सचमुच राजा होकर मेरे साथ विवाह करना चाहोगे तो तुम्हें दो कार्य संपन्न करने होंगे-एक तो सूरज पच्छिम दिशा में उग जाए और दूसरे-गंगा नदी को हमारे राज्य में प्रवाहित करना होगा ।"

सुहासिनी की बातें सुनकर प्रतापवर्मा का चेहरा पीला पड़ गया । थोड़ी देर रुक कर बोला— "यह काम किसी के द्वारा भी संभव नहीं है । तुम सिर्फ़ मजाक़ करती हो ।"

"मैं मजाक़ नहीं करती हूँ। पर सच बात तो यह है कि अधिकार रखने वालों के द्वारा कोई भी कार्य संभव हो सकता है ।" सुहासिनी ने जवाब दिया ।

प्रताप वर्मा थोड़ी देर सोच कर बोला— "मुझे एक महीने की अवधि दो, मैं तुम्हारी शर्तों को पूरा करूँगा ।"

सुहासिनी ने युवराजा की बात मान ली। प्रताप वर्मा राजधानी को लौट गया और सभी

के राजा हो ! बताओ, क्या तुम मुझको इस देश की रानी बना सकते हो ?" सुहासिनी ने कहा ।

यह प्रश्न सुनकर प्रतापवर्मा ने सुहासिनी की ओर ध्यान से देखा। उसके सौंदर्य को देख युवराजा बहुत प्रभावित हो गया । उसने कहा— "यदि तुम्हारे मन में इस देश की रानी बनने की सचमुच कामना हो तो तुमने अपनी इच्छा ठीक व्यक्ति के सामने प्रकट की है। मैं इस देश का होने वाला राजा हूँ। मेरा नाम प्रतापवर्मा है। मैं देशाटन करते हुए इधर आ निकला हूँ। आज तक तुम जैसी रूपवती कन्या मेरी दृष्टि में न पड़ी। यह तो तुम्हारा भाग्य ही कहा जा सकता है। मैं अवश्य तुमको अपनी

मंत्रियों को बुलवाकर कहा— "आप लोग ध्यान से मेरी बातें सुनिए। पहली बात तो यह है कि सूरज पश्चिम दिशा में उगे और दूसरी बात है-गंगा हमारे राज्य में बहने लगे-इसके लिए हमें क्या करना होगा, इसका उपाय सोचिये।"

यह प्रस्ताव सुनकर सारे मंत्री हक्का-बक्का होकर बोले— "युवराज ! हमें संदेह होता है कि देशाटन के समय कहीं आपने कौहर तो नहीं खा लिया ? काल की गति बदलना किसी के लिए संभव नहीं है। दूसरी बात-कहीं दूर बहने वाली गंगा नदी को हमारे राज्य में लाना भी नामुमकिन है।"

"ऐसी हालत में एक राजा के रूप में मेरे अधिकार के लिए कोई मूल्य और अर्थ न होगा। और मैं इस राज्य के दायित्व को अपने ऊपर लेने के लिए भी तैयार नहीं हूँ। मैं भी एक साधारण नागरिक के रूप में संतोष पूर्वक अपना जीवन-यापन करूँगा।" प्रताप वर्मा ने कहा।

ये बातें जब महाराज के कानों में पड़ीं तब उन्होंने युवराजा प्रताप वर्मा को अपने पास बुलाकर कहा— "तुम जो माँग करते हो, वे असंभव हैं। मेरा अनुमान है कि तुमने राज्य-भार को ग्रहण करने से बचने के लिए यह चाल चली है।"

इस पर प्रताप वर्मा ने राजा को सुहासिनी का सारा वृतांत्त सुनाया।

महाराजा आश्चर्य से बोले— "तुम्हारे लिए एक बेवकूफ़ गंवार लड़की की बात पर ऐसे निर्णय पर पहुँचना उचित नहीं है।"

"वह लड़की बेवकूफ़ नहीं है, बल्कि बड़ी समझदार है।" प्रतापवर्मा ने कहा।

"इस बात की भी हम परीक्षा लेंगे।" यों कहकर राजा ने अपने सेवकों को भेज करके आदरपूर्वक सुहासिनी को अतःपुर में बुला लिया।

सुहासिनी को जब मालूम हुआ कि प्रताप वर्मा सचमुच युवराजा है, तब वह उन से क्षमा मांगती हुई बोली— "युवराजा, अज्ञानवश मैंने कुछ कह दिया। कृपया आप मुझे क्षमा कर दीजिए।"

इस पर प्रतापावर्मा ने कहा— "तुम्हारी भूल इतनी सरलता के साथ क्षमा करने योग्य नहीं है। तुमने जो इच्छा प्रकट की, उसको मैं पूरा नहीं कर पाया। तुम्हें उनको संभव करके सत्य साबित करना होगा। वरना तुम्हें कठिन दण्ड भोगना पड़ेगा।"

युवराजा के मुँह से ये बातें सुनकर सुहासिनी डरी नहीं बल्कि गंभीर होकर बोली— "मैं यह साबित कर सकती हूँ कि मैं ने जो कुछ कहा वह संभव है। पर इन्हें संभव बनाने के लिए मुझे अधिकार चाहिये।"

"मैं तो इस वक्त युवराजा हूँ। इस देश का राजा नहीं हूँ। इसलिए तुम जिस अधिकार की कामना करती हो, वह मेरे पिताजी ही दे सकते हैं।" प्रताप वर्मा ने कहा।

महाराजा ने इस संबन्ध में देर तक विचार किया। उन्हें लगा कि सुहासिनी बड़ी समझदार है। उसको अधिकार देने का मतलब उसे रानी बनाना होगा। रानी बनाने के बाद उसको दण्ड देना संभव नहीं है।

यों थोड़ी देर सोचने के बाद राजा के मन में एक उपाय सूझा। उन्होंने सुहासिनी को सम्बोधित कर कहा— "अच्छी बात है। सुनो, आज से तुम्हीं इस देश की रानी हो। पर प्रताप वर्मा प्रधान सेनापति का पद संभालेगा। तुम राजद्रोह का प्रयत्न करोगी तो रानी के पद से हटा दी जाओगी। तुम अपनी बातों को जब सत्य प्रमाणित करोगी तभी प्रताप वर्मा के साथ तुम्हारा विवाह होगा। लेकिन इस कार्य को पूरा करने के लिए तुम्हें केवल एक महीने की अवधि दी जाएगी।"

सुहासिनी ने राजा की शर्तें मान लीं। इसके बाद सुहासिनी को उस देश की रानी बना दिया गया। शासन कार्यों में दखल दिये बिना महाराजा अंतःपुर में ही रहने लगे। प्रताप वर्मा ने सेना का भार संभाला।

रानी का पद ग्रहण करते ही सुहासिनी ने शासन संबन्धी व्यय को घटा दिया। इससे जो बचत हुई, उस हद तक जनता से वसूला जाने वाला कर कम कर दिया। इस प्रकार के कुछ अन्य प्रजोपयोगी कार्यों द्वारा सुहासिनी एक सप्ताह के अन्दर जनता के आदर की पात्र बन गई।

रानी बनने के बीस दिन बाद सुहासिनी महाराजा तथा प्रताप वर्मा से मिलकर बोली— "आज आप दोनों मेरे साथ नगर-भ्रमण के लिए चलिए। मैंने इस बीच जो कुछ साध लिया है उसे आप लोग स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हैं।"

इसके बाद वे तीनों वेष बदल कर नगर भ्रमण पर चल पड़े। वह सूर्योदय का समय था। सुहासिनी ने रास्ता चलने वाले एक नागरिक को अपने निकट बुलाकर पूछा— "यह कौन सी दिशा है ?"

"पश्चिम है !" झट उस नागरिक ने उत्तर दिया। महाराजा और प्रताप वर्मा के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। राजा और युवराजा ने कुछ और नागरिकों से यह सवाल किया। सबने यही उत्तर दिया कि सूरज के उगने वाली दिशा पश्चिम

है।

इसके बाद वे तीनों नगर के मध्य भाग में बहने वाली तारा नदी के पास पहुँचे। सुहासिनी ने वहाँ पर खड़े एक नागरिक से पूछा— "सुनो भाई, इस नदी का नाम क्या है ?"

"गंगा नदी है।" उस व्यक्ति ने झट जवाब दिया।

इसके बाद कई व्यक्तियों ने भी यही जवाब दिया। इस पर सुहासिनी ने नतमस्तक होकर कहा— "प्रभु, मैंने यह साबित कर दिखाया है कि मैंने जो कामनाएं की थीं, वे संभव हैं।"

"यह तो बहुत आश्चर्यजनक बात हुई है। सूर्य तो पहले ही जैसे पूरब में ही उग रहा है। पर सभी नागरिक उस दिशा को पश्चिम बता रहे

हैं। इसी प्रकार नगर में बहने वाली तारानदी को गंगा बता रहे हैं, इसे तुमने कैसे साध लिया है ? इस का रहस्य बता दो।'' महाराजा ने सुहासिनी से पूछा ।

''महाराज, इधर कुछ दिनों से मैं यही सोच रही थी कि किस प्रकार की शासन-पद्धति द्वारा जनता सुखी और संपन्न बन सकती है । मेरा जन्म अंतःपुर में नहीं हुआ, गाँव में हुआ है । इसलिए मैं जनता की कठिनाइयों को अच्छी तरह से जानती हूँ । रानी का पद ग्रहण करते ही उस मौक़े का उपयोग करके जनता को हित पहुँचाने वाले मैंने कुछ सुधार किए, इस का परिणाम यह हुआ कि मेरे प्रति जनता के मन में जो आदर भाव पैदा हुआ, वह दो सप्ताह के अन्दर आराधना के रूप में बदल गया । इसका लाभ उठा कर मैंने अधिकारियों के द्वारा यह प्रचार करवाया कि तुम लोगों की रानी का स्वास्थ्य गिर गया है । यदि उन्हें शीघ्र स्वस्थ हो जाना है तो तुम लोगों को पूरब को पश्चिम तथा नगर में बहनेवाली तारा नदी को गंगा नदी कहकर पुकारना होगा ।'' सुहासिनी ने कहा ।

इस पर प्रताप वर्मा ने तालियाँ बजा कर कहा— ''अहा, मेरे दिमाग में यह बात नहीं आई कि यह कार्य इतना सरल है ।''

पर महाराजा ने गंभीर होकर सुहासिनी से कहा— ''मैं तुम को अपनी बहू के रूप में स्वीकार करता हूँ । इस का कारण-तुम्हारी बुद्धिमत्ता या मेरे वचन का पालन करना भी नहीं है, बल्कि यह है कि चन्द दिनों में ही तुम जनता के लिए आदर का पात्र बन गई । मेरे देश की प्रजा के लिए तुम जैसी महारानी की नितांत आवश्यकता है । मैं तुमको इस देश की रानी बना कर मैं अपने देश की प्रजा का आदर पाना चाहता हूँ ।''

इसके चन्द दिनों बाद प्रताप वर्मा तथा सुहासिनी का विवाह वैभव पूर्वक संपन्न हुआ । प्रताप वर्मा राजा बन गए, फिर भी वास्तव में सेनापति का पद संभालते हुए उसने शासन सम्बन्धी जिम्मेदारी सुहासिनी को सौंप दी और एक उत्तम राजा के रूप में यश प्राप्त किया ।

मेधावी दूत

क्रौंच द्वीप के राजा कर्मवीर सिंह ने अपनी बुद्धि से पड़ोसी देशों के राजाओं को मित्र बना लिया पर पुष्कर द्वीप का राजा धर्मवीर सिंह उनके लिए सर दर्द का कारण बना हुआ था । कर्मवीर सिंह बराबर इस चिंता में थे कि पुष्कर द्वीप को कैसे अपने अधीन करें ।

राजा कर्मवीरसिंह ने सोचा कि इस कार्य को संपन्न कर सकने वाला व्यक्ति कौन है । आखिर उन्होंने अपने महामंत्री दूरदर्शी को पुष्कर द्वीप के राजा धर्मवीर सिंह के यहाँ दूत बना कर भेजा ।

धर्मवीर सिंह के मन में इस बात का अहंकार था कि वह एक महान मैधावी है । इसलिए उसने राजदूत दूरदर्शी को अपनी बुद्धि से चकित कर वापस भेज देने की योजना बनाई ।

दूरदर्शी पुष्कर द्वीप के क़िले के पास अभी पहुँच ही पाया था कि इस बीच सैनिकों ने क़िले के दरवाजों को बन्द कर दिया । धर्मवीर सिंह सिंहासन पर बैठकर यह सारा दृश्य देख रहा था ।

राजा को देखते ही दूरदर्शी ने नीचे से ही प्रणाम किया । राजा ने व्यंग्यपूर्वक हँस कर कहा— "मंत्री, देखो फाटक के एक तरफ़ कुत्तों के प्रवेश करने के लिए एक सुरंग है । उसमें से घुसकर ऊपर आ जाओ ।" सिंहासन के चारों तरफ़ बैठे हुए राज दरबार के लोगों ने व्यंग्यपूर्वक कहा— "वाह, वाह ।"

इसपर मंत्री ने झट जवाब दिया— "जी महाराज ! आपके देश में जिन के प्रवेश करने का द्वार हो तो वे उसी द्वार से होकर निकलेंगे । अगर आपका राज्य कुत्तों का हो तो उस द्वार से प्रवेश करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।"

यह उत्तर पाकर राजा का चेहरा सफ़ेद पड़ गया ।

"अरे, यह तो मेरी चाल से बच गया ।" यों सोच कर राजा ने मंत्री दूरदर्शी को प्रधान फाटक

पच्चीस वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

से ही अन्दर बुलवा कर अपनी बगल में एक आसन पर बिठाया ।

देखने में दूरदर्शी ठिगना था । वह आसन के आधे भाग में ही समा गया । राजा ने फिर से दूत का अपमान करने के ख्याल से कहा, "मंत्री महोदय, तुम लोगों की बुद्धि के अनुसार तुम्हारे देश के लोग भी क्या ठिगने होते हैं ?"

इसपर मंत्री ने झट जवाब दिया, "महाराज, हमारे देश में तरह-तरह के लोग हैं । साथ ही हमारे राज्य में एक और नियम भी है । वहाँ का रिवाज है कि नीच लोगों के यहाँ ठिगने आदमियों तथा महान व्यक्तियों के पास लंबे कदवालों को भेजा जाए । इसीलिए मुझको यहाँ पर भेजा गया है ।" यह जवाब सुनकर राजा का चेहरा स्याह पड़ गया ।

"कमबख़्त, इस बार भी हाथ से निकल गया । इसका अपमान कैसे करें ?" यों विचार कर राजा मौक़े की ताक में था ।

इस बीच कुछ सिपाही एक क़ैदी को पकड़ लाये और शिकायत की— "महाराज, यह आदमी पुष्कर द्वीप का निवासी है और इसने हमारे राज्य में चोरी की है ।"

राजा ने मंत्री को अपमानित करने के ख्याल से पूछा— "मंत्री महाशय, क्या तुम्हारे देश के सभी लोग चोर और डाकू ही होते हैं ?"

मंत्री बड़ा चतुर था । उसने कहा— "महाराज, यह उस प्रदेश की महिमा है, जैसी भूमि पर वहाँ के लोग क़दम रखते हैं वैसे ही विचार आते हैं । आपके देश में आने पर हमारे देशवासी के मन में शायद चोरी करने की बुद्धि पैदा हुई हो, पर हमारे देश में चोरी नाम मात्र के लिए भी नहीं है ।"

यह उत्तर पाकर राजा का सर चकरा गया । उसने सोचा कि पुष्कर द्वीप के साथ शत्रुता मोल ले कर विजय नहीं पा सकते ।

इसके बाद राजा ने मंत्री से कोई पुरस्कार माँगने का अनुरोध किया । इस पर मंत्री ने कहा, "महाराज, मैं चाहता हूँ कि दानों राज्यों के बीच सदा मैत्री भाव बना रहे ।"

उस दिन से दानों राज्यों में मित्रता हो गई ।

विष्णु पुराण

कृत और त्रेता युगों के बाद द्वापर युग में राक्षस अधिक संख्या में मानवों के रूप में जन्म लेकर पृथ्वी के लिए भार बन गए। इस पर भू देवी ने विष्णु से प्रार्थना की।

विष्णु ने अभय देते हुए कहा— "तुम चिन्ता न करो। मैं कृष्णावतार लेकर तुम्हारे सारे दुखों को दूर कर दूँगा।"

आदिकाल से ही विष्णु के प्रबल शत्रु कालनेमि नामक राक्षस ने कंस के नाम से पृथ्वी पर जन्म लिया और मथुरा नगर के राजा उग्रसेन का पुत्र कहलाया।

देव और दानवों के युद्ध में दानवों के नेता बनकर विष्णु से युद्ध करने वाले विप्रचिति के राजा ने जरासंध के रूप में जन्म लिया और राजाओं को पकड़ कर भैरव की बलि देने लगा। कंस उसी जरासंध का दामाद था।

उग्रसेन के छोटे भाई की पुत्री देवकी का विवाह यदुवंशी राजा वसुदेव के साथ हुआ। कंस उस दंपति को रथ पर बिठाकर विदा करने जा रहा था। उसी वक्त यह आकाशवाणी सुनाई दी— "देवकी की आठवीं संतान के हाथों कंस मार डाला जाएगा।"

इस पर क्रुद्ध हो कंस ने देवकी का वध करना चाहा। तब वसुदेव ने उसको रोक कर यह वचन दिया कि देवकी के गर्भ से पैदा होने वाले सभी शिशुओं को वह कंस के हाथ में सौंप देगा। इस वचन के अनुसार वसुदेव ने छः शिशुओं को कंस के हाथ सौंप दिया।

इसके बाद देवकी के गर्भ से सातवीं संतान के रूप में विष्णु के अंश को लेकर

आदिशेष अवतार लेने लगे। इस पर विष्णु ने योगमाया देवी को आदेश दिया कि आदिशेष वाले पिण्ड को गोकुल वासिनी वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में पहुँचा कर स्वयं नन्द की पत्नी यशोदा की पुत्री के रूप में जन्म धारण करें।

देवकी का सातवां गर्भ प्रसव का रूप लिए बिना ही उसके भीतर समा गया। इसके पश्चात देवकी ने जब आठवीं बार गर्भ धारण किया तब कंस ने देवकी तथा वसुदेव को कारागार में डाल दिया।

वह भाद्रपद महीने का कृष्ण पक्ष था। अष्टमी के दिन चन्द्रमा ने रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश किया। अर्द्धरात्रि के समय अचानक कारागार के पहरेदार निद्रा की गोद में चले गए। उसी समय देवकी का प्रसव हुआ। विष्णु ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया। आश्चर्य की बात थी कि कारागार के द्वार अपने आप खुल गए।

विष्णु के आदेश पर वसुदेव ने उस शिशु को यमुना नदी पार कराया। उसी समय गोकुलवासियों पर माया निद्रा छा गई। उस निद्रा की अवस्था में ही यशोदा ने एक बालिका को जन्म दिया। वसुदेव यशोदा की बगल में अपने साथ लाए हुए बालक को लिटा कर अचेतन अवस्था में पड़ी हुई बालिका को उठा करके वापस चले आये।

जब वसुदेव कारागार के अन्दर पहुँच गए तब सारी दिशाओं को प्रतिध्वनित करने वाले स्वर में वह बालिका रोने लगी।

जैसे ही कंस उस शिशु को शिला पर पटक कर मारने को हुआ, उसी वक्त वह बालिका कंस के हाथों से छूट कर आकाश में उड़ गई और खिल-खिला कर हंसते हुए बोली—"अरे दुष्ट कंस। तुम्हारा संहार करने वाला शिशु जीवित है।" यह कहकर वह बालिका दुर्गादेवी के रूप में दर्शन देकर अंतर्धान हो गई।

इसके पूर्व कंस ने भय और क्रोध के वशीभूत हो देवकी तथा वसुदेव के सामने ही उनके छः शिशुओं का संहार किया था।

गोकुल में कृष्ण के जन्म के अवसर पर कृष्णाष्टमी का दिन गोकुलाष्टमी के रूप में धूमधाम से मनाया गया। इसके पूर्व कृष्ण के

बड़े भाई के रूप में रोहिणी के यहाँ बलराम ने जन्म लिया था ।

एक दिन नारद कंस के यहाँ आये और उसे चेतावनी देते हुए बोले— "हे कंस, तुम वास्तव में उग्रसेन के पुत्र नहीं हो बल्कि कालनेमि हो । तुमने सुना है न कि तुम्हारा संहार करने के लिए विष्णु ने कहीं जन्म धारण कर लिया है । तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में सभी राक्षस तैयार बैठे हैं ।"

उग्रसेन के साथ विवाह होने के पश्चात एक बार उनकी रानी उनके वियोग में चिंतित थी । तब एक राक्षस ने उग्रसेन के रूप में जाकर उस रानी को धोखा दिया । परिणाम स्वरूप कालनेमि ने उसके गर्भ में प्रवेश करके कंस के रूप में जन्मधारण कर लिया ।

कालांतर में कंस ने उग्रसेन को बन्दी बनाकर उनके सिंहासन पर अधिकार कर लिया । उसके बाद उसने सभी राक्षसों का संगठन किया और छोटे शिशुओं का संहार करने के लिए पूतना नामक राक्षसी को भेजा । पूतना मानवी के रूप में प्रत्येक गांव में जाकर छोटे शिशुओं का संहार करते हुए मोकुल पहुँची । वहां पर पूतना जब कृष्ण को दूध पिलाने लगी, तब अन्होंने दूध चूस कर पूतना को मार डाला ।

बवण्डर के रूप में आकाश में उठा ले जाने वाले तृणावर्त को तथा गाड़ी के रूप में टूट पड़ने वाले शकटासुर को भी बालक कृष्ण ने मार डाला ।

यशोदा कृष्ण को अपने निजी पुत्र के रूप में लाड़-प्यार से पाल-पोसकर उस पर मुग्ध होती रही । बालकृष्ण नटखट बनकर घर-घर में मक्खन चुराने लगे । कृष्ण ने अनेक अद्भुत लीलाएँ कीं । कृष्ण की लीलाओं से गोकुल आनन्द की तरंगों में तिरने लगा ।

यशोदा ने कृष्ण को ओखली से बांध दिया । कृष्ण उसे दो महावृक्षों के मध्य खींच ले गया । इस पर दोनों वृक्ष जड़ सहित उखड़ गए और उन वृक्षों में स्थित गंधर्व शाप से मुक्त हो गए ।

यशोदा ने सुना कि कृष्ण ने मिट्टी खा ली है । इस पर उसने उसे मुंह खोल कर दिखाने के लिए डांटा । तब कृष्ण ने जम्भाई लेकर यशोदा को अपने विश्व रूप के दर्शन कराए ।

कालीय महासर्प के फणों पर तांडव करके कृष्ण ने उसका मर्दन किया ।

गोकुल के निवासी वृन्दावन के लिए जब प्रवासी बन गए, और उन लोगों ने गोवर्द्धन पर्वत की पूजा की तब इस पर देवेन्द्र ने कुपित होकर ओलों की वर्षा की । उस वक्त कृष्ण ने अपनी उंगली से गोवर्द्धन पर्वत को उठाकर छतरी की भांति पकड़ करके गोपों तथा गायों की रक्षा की और इस प्रकार इन्द्र के अहंकार का दमन किया ।

कृष्णा ने वेणुगोपाल बनकर गायों को चराया । मुरली बजाकर गायों, गोपिकाओं तथा वृंदावन को तन्मय बनाया । छद्म वेष में आए हुए अनेक राक्षसों का वध किया । बलराम ने भी कुछ राक्षसों का अन्त किया ।

कृष्ण और बलराम का संहार करने के लिए कंस ने धनुर्यज्ञ के बहाने उन्हें मथुरा नगर में बुलवा लिया । उसने इन दोनों बालकों का वध करने का जो षड़यंत्र रचा उसे बालक यदु वीरों ने विफल कर दिया ।

बाल कृष्ण ने कंस को सिंहासन पर से खींच कर मुके मार-मार कर उसका अंत कर डाला ।

देवकी, वसुदेव तथा उग्रसेन को मुक्त करके कृष्ण ने उग्रसेन को सिंहासन पर बिठया । कालान्तर में बड़े हो कर कृष्ण और बल राम यदु वंश के नेता बन गए ।

जरासंध ने अपनी अस्ति और प्राप्ति नामक पुत्रियों को विधवाएँ बनाने के कारण कृष्ण से बदला लेना चाहा । उसने तेईस अक्षौहिणी सेना के साथ मथुरा को घेर लिया ।

कृष्ण ने जरासंघ को हरा दिया और उसे जीवित छोड़ कर भगा दिया ।

यवन म्लेच्छों के राजा कालयवन राक्षस को जरासंध ने कृष्ण के विरोध में उकसाया ।

कृष्ण कालयवन से बचकर भाग गए और मुचिकुन्द की गुफा में जा छिपे ।

मुचिकुंद इक्ष्वाकु समय के महान चक्रवर्ती मांधाता के पुत्र थे और एक महान सम्राट थे ।

मुचिकुंद ने देवासुर संग्राम के समय देवताओं की मदद की थी । इस पर देवताओं ने उनसे वर माँगने को कहा । मुचिकुन्द ने मोक्ष की कामना की । इस पर देवताओं ने उन्हें बताया कि द्वापर युग में उन्हें कृष्ण के दर्शन हो
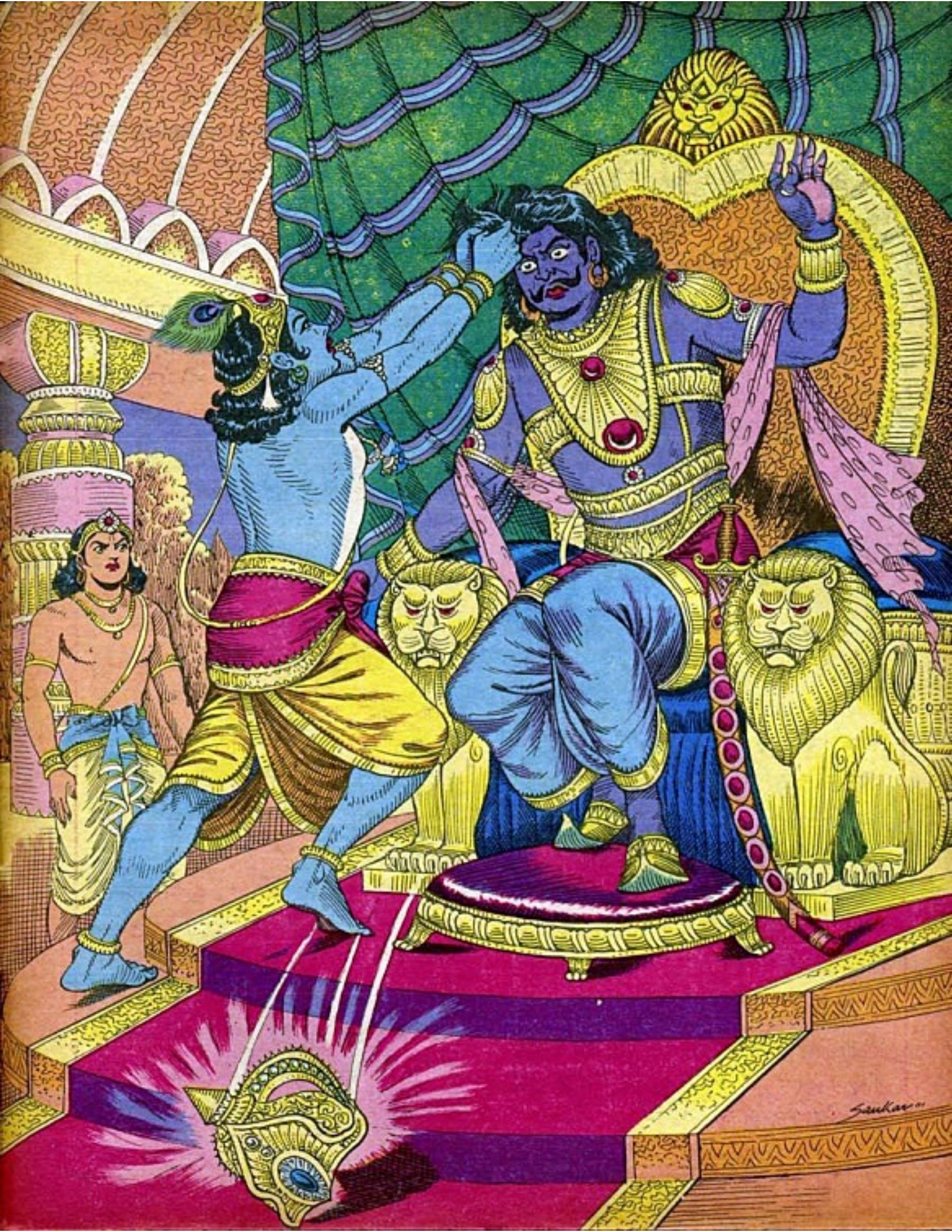
सकते हैं और उनके दर्शन से ही मोक्ष मिल सकता है। तब मुचिकुंद ने देवताओं से यह वर मांगा कि इस बीच उनकी निद्रा को भंग करने वाले उसके देखते ही भस्मीभूत हो जाएं।

कालयवन ने गुफा में पहुँच कर मुचिकुन्द को ही कृष्ण समझा और उन पर लात मारी। इस पर मुचिकुन्द की निद्रा भंग हो गई और उन्होंने कालयवन की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। परिणाम स्वरूप वह जल कर भस्म हो गया।

कृष्ण ने मुचिकुन्द को दर्शन देकर बताया— "तुम बदरिकाश्रम में जाकर तपस्या करो, तुम्हारी तपस्या सफल होगी और तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा।"

जय और विजय अपने तीसरे जन्म में कृष्ण के शत्रु बनकर शिशुपाल तथा दंतवक्र के नाम से पैदा हुए।

चेदि राजा दमघोष के पुत्र के रूप में शिशुपाल चार हाथों तथा तीन आँखों के साथ पैदा हुआ। उसके जन्म के समय यह आकाशवाणी हुई कि जिसके द्वारा उठाने पर शिशु के दो हाथ और एक आँख अदृश्य हो जायेंगे, उसी के हाथों इसका संहार होगा।

शिशुपाल की मां सात्वती अपने घर आए सभी लोगों से बालक को गोद में लेने की बात कहा करती थी। सात्वती कृष्ण और बलराम के रिश्ते में फूफी लगती थी। उनके हाथ में भी सात्वती ने शिशुपाल को दिया। कृष्ण की गोद में आते ही शिशुपाल सामान्य बालक के समान हो गया। सात्वती ने कृष्ण से निवेदन किया कि शिशुपाल के सौ अपराधों को क्षमा कर दें। इस पर कृष्ण ने सात्वती को वचन दिया।

शिशुपाल जब राजा बना तब जरासन्ध के साथ मिलकर अपराध एंव अत्याचार करने लगा। उसका छोटा भाई दन्तवक्र इन कामों में उसकी मदद करने लगा।

जरासन्ध बराबर मथुरा नगर पर आक्रमण करता रहा। इस पर कृष्ण ने कई बार उसे हराया और भगा दिया। इस प्रकार कृष्ण ने अनेक दुष्ट एवं अत्याचारी राजाओं का संहार किया।

कृष्ण ने समुद्र से स्थल मांग कर समुद्र के मध्य भाग में विश्व कर्म के द्वारा सुरक्षित रूप में

द्वारका नगर का निर्माण कराया और अपने वंश के लोगों को वहाँ भेज दिया ।

जरासन्ध ने अन्तिम बार शिशुपाल, दन्तवक्र, पौंड्रक, शाल्व इत्यादि अपने अनुयायी बने सभी राजाओं का संगठन करके मथुरा नगर पर फिर चढ़ाई कर दी ।

इसके पूर्व ही कृष्ण और बलराम ने यादवों तथा मथुरा की प्रजा को भी द्वारका में पहुँचा दिया था। इसके बाद वे भी प्रवर्षणगिरि पहुँच कर उसके शिखर पर चले गए ।

जरासन्ध आदि ने प्रवर्षणगिरि के चारों तरफ़ आग लगा कर गिरि को जला दिया। इस पर कृष्ण और बलराम आकाश मार्ग से सुरक्षित द्वारका नगर पहुँचे । जरासन्ध और शिशुपाल यह सोच कर बिगुल बजाते वापस लौट रहे थे कि कृष्ण और बलराम उस अग्नि काण्ड में जल-भुन कर भस्म हो गये होंगे। तभी द्वारका में कृष्ण ने शंख बजाया। उस शंख की ध्वनि सुनकर सबके चेहरे सफ़ेद पड़ गए और वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगे ।

इसके बाद शिशुपाल ने आग बबूला हो मथुरा नगर को जलवा दिया ।

जरासन्ध ने नौकाओं द्वारा द्वारका को घेरने के लिए अपने सैनिकों को भेजा पर भयंकर तूफान में फंस कर सारी नौकाएं डूब गईं । जरासन्ध समुद्र के इस पार किनारे पर खड़े होकर लहरों के थपेड़ों को देख रहा था। तब कृष्ण द्वारा "नानाजी" का सम्बोधन और उनकी

खिलखिलाहट सुनाई दी और समुद्र के मध्य एक पहाड़ पर खड़े होकर हंसते हुए कृष्ण उसे दिखाई दिये ।

"जरासन्ध, अब तुम हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते, समुद्र तुमको द्वारका में पहुँचने न देगा । तुम्हारी क़िस्मत में मेरे हाथों मरने का भाग्य नहीं लिखा गया। तुम अपने ही बराबर बल रखने वाले के हाथों मारे जाओगे। थोड़े दिन बाद फिर हमारी मुलाक़ात होगी ।

विदर्भ राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी के रूप में लक्ष्मी पैदा हुई। वह बचपन से ही कृष्ण को अपना पति बताने लगी थी। रुक्मिणी का बड़ा भाई रुक्मी कृष्ण के शत्रु पक्ष में जाकर मिल गया और अपनी बहन रुक्मिणी का विवाह

शिशुपाल के साथ करने की सारी तैयारियाँ करने लगा । इस पर रुक्मिणी ने कृष्ण के पास संदेशा भेजा कि उस विवाह को भंग करके कृष्ण उसे स्वयं स्वीकार करें ।

विवाह के पूर्व रुक्मिणी दुर्गा की पूजा करके मन्दिर से लौट रही थी । तब कृष्ण ने रुक्मिणी को हाथ का सहारा देकर चार घोड़े वाले अपने रथ पर खींच लिया । साथ ही रुक्मी, शिशुपाल और जरासन्ध का सामना भी किया ।

इस बीच बलराम यादव वीरों को साथ लेकर कृष्ण से आ मिले । कृष्ण ने शिशुपाल को मार भगाया । बलराम ने जरासन्ध को हरा कर भगा दिया और सभी शत्रु राजाओं को तितर-बितर कर दिया ।

जब कृष्ण विजय शंख बजा कर रुक्मिणी को अपने रथ पर उठा ले जा रहे थे तभी रुक्मी ने कृष्ण को रोका । कृष्ण ने रुक्मी को बन्दी बना कर उसका सिर, दाढ़ी तथा मूँछें मुंडवा कर अपमानित करके उसको प्राणों के साथ छोड़ दिया । इसके बाद रुक्मी ने फिर कभी कृष्ण के सामने सर उठाने का साहस नहीं किया ।

क्षत्रिय वीर के योग्य राक्षस विवाह के रूप में उठा लाई गई रुक्मिणी के साथ कृष्ण का विवाह द्वारका में वैभव के साथ संपन्न हुआ ।

कृष्ण पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने सत्राजित के भाई का वध करके उसके हाथ से श्यमन्तक मणि की चोरी की है । इस आरोप को झूठा साबित करने के लिए कृष्ण उस मणि की खोज में चले गए । जंगल में एक गुफा के अन्दर कृष्ण को वह मणि दिखाई दिया । इस पर कृष्ण ने जांबवान के साथ युद्ध करके उसकी पुत्री जांबवती के साथ विवाह किया । फिर उस मणि को सत्राजित के हाथ सौंप कर भूदेवी की अंशवाली उसकी पुत्री सत्यभामा के साथ विवाह कर लिया । इसके बाद कृष्ण मित्रविन्द, कालिन्दी, लक्षणा, भद्र और नाग्नजिति के साथ विवाह करके अष्ट महिषियों के साथ अष्ट सिद्धियों से पूर्ण योग पुरुष जैसे द्वारका को राजधानी बनाकर यादवों के प्रमुख नेता बनकर राज्य करने लगे ।
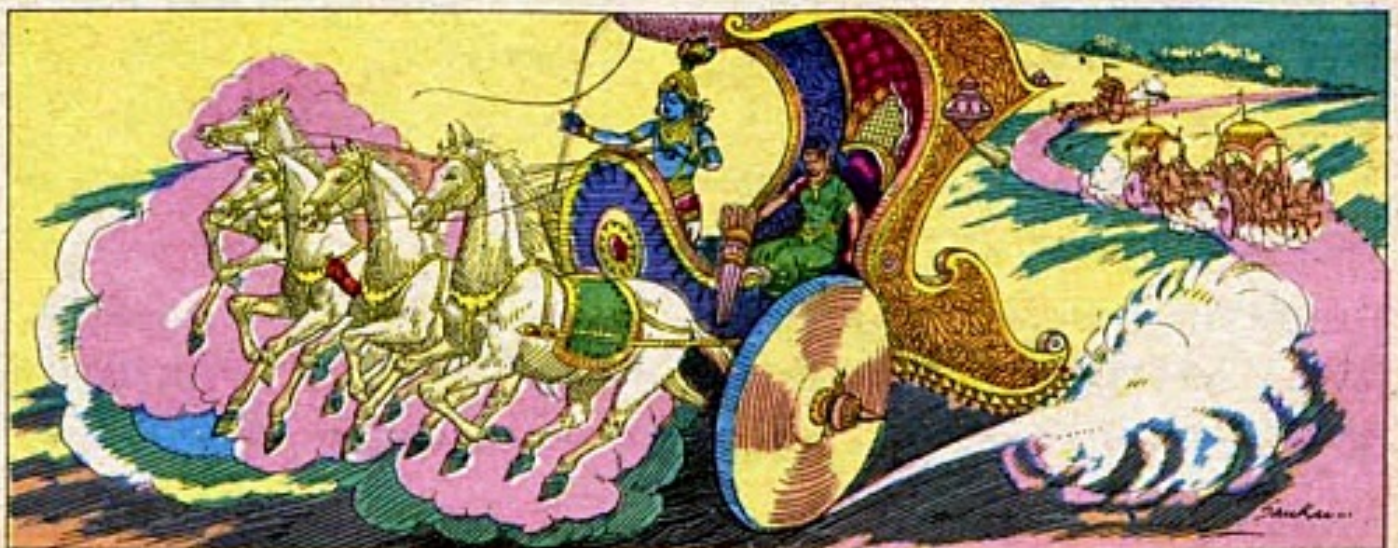
सुलतान और नौकर

अमन देश का शासक सुलतान मुबारक उद्दण्ड स्वभाव का नव युवक था। उसके मन में ज्यों ही सन्देह पैदा होता कि अमुक व्यक्ति ने अपराध किया है, उस की सच्चाई का पता लगाये बिना उसे कठोर दण्ड दे दिया करता था।

एक दिन मुबारक शिकार खेलने गया। उसके साथ कुछ सैनिक थे और नौकर सलीम भी था। उन्हें एक जगह हिरण दिखाई दिया। मुबारक ने उस पर बाण चलाना चाहा, पर वह बच कर भाग निकला।

सुलतान ने उसे घेरने के लिए अपने सैनिकों को आदेश दिया। वे हिरण की खोज में चल पड़े। एक झाड़ी के अन्दर हिरण को देख उस को सुलतान की ओर खदेड़ने लगे। उस वक्त नौकर सलीम ने हिरण पर जो तीर चलाया, वह निशाना चूक कर हिरण की ओर बढ़नेवाले सुलतान के बायें कान पर लगा और उसमें बड़ा सा छेद हो गया।

मुबारक क्रोधित हो उठा और सलीम का वध करने के लिए अपने सैनिकों को आदेश दिया।

सलीम सुलतान के सामने घुटने टेक कर बिनती करने लगा,— "हुजूर, मैंने आपको हानि पहुँचाने के ख्याल से तीर नहीं चलाया था। मैंने तीर हिरण पर चलाया था लेकिन तभी हिरण और मेरे बीच आप दौड़ कर आ गये। हुजूर, सच बताता हूँ, आप यक़ीन कीजिए! मैं अपने मालिक के प्रति ऐसा विश्वासघात कभी नहीं कर सकता। आप के प्रति मेरे मन में अपार श्रद्धा और भक्ति है! ज़रूरत पड़ने पर मैं आप के वास्ते अपनी जान तक दे सकता हूँ। ऐसी हालत में आप को हानि पहुँचाने की बात मैं सपने में भी नहीं सोच सकता। सच्ची बात यह है। इसलिए कृपया मुझे प्राण-दान कीजिए अल्लाह भी किसी खतरे के समय जरूर आप

जमुना प्रसाद

पर मेहरबानी करेंगे ।''

सलीम की ये बातें सुनकर सुलतान का दिल पसीज उठा और उसने सलीम को क्षमा कर दिया। इसके बाद सब लोग राजधानी को लौट आये ।

समुद्र में किसी द्वीप पर सुलतान का अधिकार था। वह वर्ष में एक बार उस द्वीप की यात्रा किया करता था। सुलतान जहाज़ पर उस द्वीप के लिए रवाना हुआ। उसी वक्त समुद्र में भयंकर तूफ़ान उठा, जिस से जहाज़ लहरों के थपेड़े खाकर डगमगाने लगा। फिर समुद्र के भीतर की एक चट्टान से लगकर जहाज़ टुकड़े-टुकड़े हो गया ।

सुलतान एक टुकड़े का सहारा लेकर कई दिनों तक समुद्र में बराबर बहता रहा और आखिर किसी दूसरे राज्य के तट पर जा पहुँचा।

वह एक निर्जन प्रदेश था। सुलतान बिखरे बाल, फटे वस्त्रों के साथ दूर तक पैदल चलकर संध्या तक उस देश के राजा के क़िले के पास पहुँचा ।

उस राज्य में सुलतान की कोई जान-पहचान का आदमी नहीं था। उस समय वह दीन-हीन हालत में था, इसलिए यदि वह अपने को किसी देश का सुलतान बतलाता तो कोई उस की बातों पर यक़ीन नहीं करता। इन्हीं विचारों में डूब कर मुबारक क़िले के पास के एक छोटे से टीले से सट कर लेट गया। थोड़ी देर में उस की आँख लग गई। कुछ देर बाद अचानक किसी की लात खाकर मुबारक चौंक पड़ा और कराहते हुए उठ बैठा ।

उसके समीप में पड़ी एक लाश को दिखाकर दो सिपाहियों ने उससे गरज कर पूछा— ''बताओ, तुमने इस आदमी की हत्या क्यों की ?''

''मैंने किसी की हत्या नहीं की। मैं इस लाश को अभी-अभी देख रहा हूँ।'' मुबारक ने जवाब दिया ।

सिपाहियों ने उसे पकड़ कर अपने राजा के सामने हाज़िर किया। राजा ने मुबारक को क़ैद में डालने का आदेश दे दिया ।

उस देश के राजा ने मुबारक का सर नहीं

कटवाया था, इस पर वह बहुत खुश हुआ। उसने कभी लोगों की कैफ़ियत तलब किये बिना उन्हें मौत का दण्ड सुनाया था। वह अब सोचने लगा— "बेचारे, उनमें कई लोग निर्दोष भी होंगे।"

मुबारक के कमरे की दीवार में थोड़ी ऊँचाई पर एक खिड़की थी। एक कौआ उसके समीप पहुँच पर बराबर काँव-काँव चिल्लाने लगा। इस पर क्रोध में आकर कमरे में से एक पत्थर उठा कर मुबारक ने उस पर फेंक दिया। पत्थर कौए पर तो नहीं लगा, पर सनसन आवाज़ करते खिड़की में से बाहर निकल गया। मुबारक चिंतित होकर अपने मन में सोचने लगा कि अभी तक मेरे भीतर से जल्दबाजी की यह आदत छूट नहीं पाई। इसके पहले इसी की वजह से मैं ने एक युवक को प्राण दण्ड दिया, पर थोड़ी देर बाद अपने मन पर काबू रख पाया। आइन्दा मुझे इस मामले में बहुत ही सावधान रहना चाहिए। इस प्रकार उसने अपने मन में यों निश्चय कर लिया।

दो-तीन पल भी बीत न पाये कि दो सिपाही कमरे के किवाड़ खोलकर अन्दर आ गए, और मुबारक की बाँहें मरोड़ कर खुले दरवाजे से होकर बाहर फेंक दिया। पहले से ही वहाँ पर इकट्ठे हुए चार-पाँच युवकों के सामने वह औंधे मुँह जा गिरा।

उन युवकों में उस देश का युवराज भी था।

वे लोग वहाँ पर कोई खेल खेल रहे थे। मुबारक ने खिड़की में से कौए पर जो पत्थर फेंका था, वह युवराज से जा लगा और उसके बाएँ कान पर घाव हो गया।

युवराज ने दांत पीस कर सिपाहियों को आदेश दिया— "तुम लोग इस दुष्ट को ले जाकर इसका सर काट दो।"

सिपाही मुबारक को उठाकर खींच ले जा रहे थे, तभी युवराज ने जोर से चिल्लाकर कहा— "रुक जाओ।"

इसके बाद वह मुबारक के पास पहुँचा, उसके बाएँ कान की ओर परख कर देखते हुए पूछा— "तुम्हारे कान में यह बड़ा छेद कैसे हो गया है ?"

मुबारक ने युवराज के सामने झुककर सलाम किया और बोला— "हुजूर, मैंने जो पत्थर कौए पर फेंका था, पर वह चूक कर जैसे आप के कान पर जा लगा, इसी प्रकार एक बार एक युवक ने हिरण पर जो तीर छोड़ा था, वह निशाना चूक कर मेरे बाएँ कान पर लग गया था।"

"ऐसी बात है। तब तो बताओ, तुमने उस युवक को कैसा दण्ड दिया?" युवराज ने मुबारक से पूछा।

"हुजूर, मैंने उस को सजा नहीं दी। बल्कि क्षमा करके छोड़ दिया।" मुबारक ने जवाब दिया। "तुम भी उस युवक जैसे क्षमा पाने की कामना नहीं करते हो, सुलतान मुबारक?" युवराज ने पूछा।

इस प्रकार मुबारक का सम्बोधन करते हुए देख वह एक दम चकित रह गया और उस की ओर ध्यान से देखा। वह कोई और न था। कुछ वर्ष पूर्व उसके यहाँ नौकर बना हुआ सलीम था। मगर उसके निजी नाम से सम्बोधित करने की मुबारक की हिम्मत न हुई।

इसके बाद युवराज ने मुबारक को बड़ी आत्मीयता के साथ आलिंगन करके कहा— "आपके चेहरे की रेखाओं को देखने पर मुझे मालूम हो रहा है कि आप मुझे पहचान गए हैं। शायद आप भूल गये होंगे। एक जमाने में मैं आपका नौकर जरूर था। उस समय मैं अपने पिताजी से झगड़ा करके आपके यहाँ नौकरी में लग गया था। पर मेरे पिताजी मेरी खोज करवा ही रहे थे। उनके द्वारा भेजे गये भेदियों ने मुझे पहचान लिया, और मुझे बताया कि मेरे घर से भाग जाने पर मेरे पिताजी मेरे वास्ते कितने दुखी हैं। मुझे अपने पिता के अपार प्रेम और वात्सल्य की याद आई। इसलिए मैं आपसे कहे बगैर अपने देश चला आया।"

इस पर मुबारक की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। तब युवराज मुबारक को अपने पिता के पास ले गया। उन्होंने मुबारक को राज्योचित आदर देकर अमूल्य उपहार दिए और उचित सुरक्षा के साथ उसके राज्य में भेज दिया।

चिन्ता का रहस्य !

जगन्नाथ यद्यपि निर्धन था, फिर भी हमेशा प्रसन्न दिखाई देता था। लेकिन कुछ दिनों से वह उदास-उदास दिखता था।

जगन्नाथ में अचानक यह परिवर्तन देख एक दिन उसके मित्र सोमनाथ ने पूछा— "क्या बात है मित्र! तुम यूं अचानक कैसे बदल गये ?"

जगन्नाथ ने गहरी सांस लेकर कहा— "सोमनाथ! मैं तुम्हें एक समाचार बताना ही चाहता था, लेकिन भूल गया। आज तक मैं निर्धन था, फिर भी मुझे कोई चिन्ता न थी और मैं बड़ा खुश था। लेकिन कुछ दिन पहले मेरे मामा का स्वर्गवास हो गया। उनके कोई सन्तान न थी, इसलिए उनकी दो लाख की सम्पत्ति मुझे मिल गई है। फिर दस दिन पहले पड़ोस के गाँव में रहने वाली मेरी फूफी भी चल बसी। उनके पति पहले ही गोलोकवासी हो गये थे। उनके भी कोई सन्तान न होने के कारण वहाँ से भी एक लाख की जायदाद मिली है।"

यह सब सुन कर सोमनाथ ने आश्चर्य से पूछा— "इतनी सारी सम्पत्ति के मिलने पर तुम्हें तो और प्रसन्न होना चाहिये, लेकिन उल्टा उदास रहने लगे हो !"

"अब हमारे रिश्तेदारों में कोई निःसन्तान नहीं रह गया।" लम्बी सांस भरते हुए जगन्नाथ ने कहा।
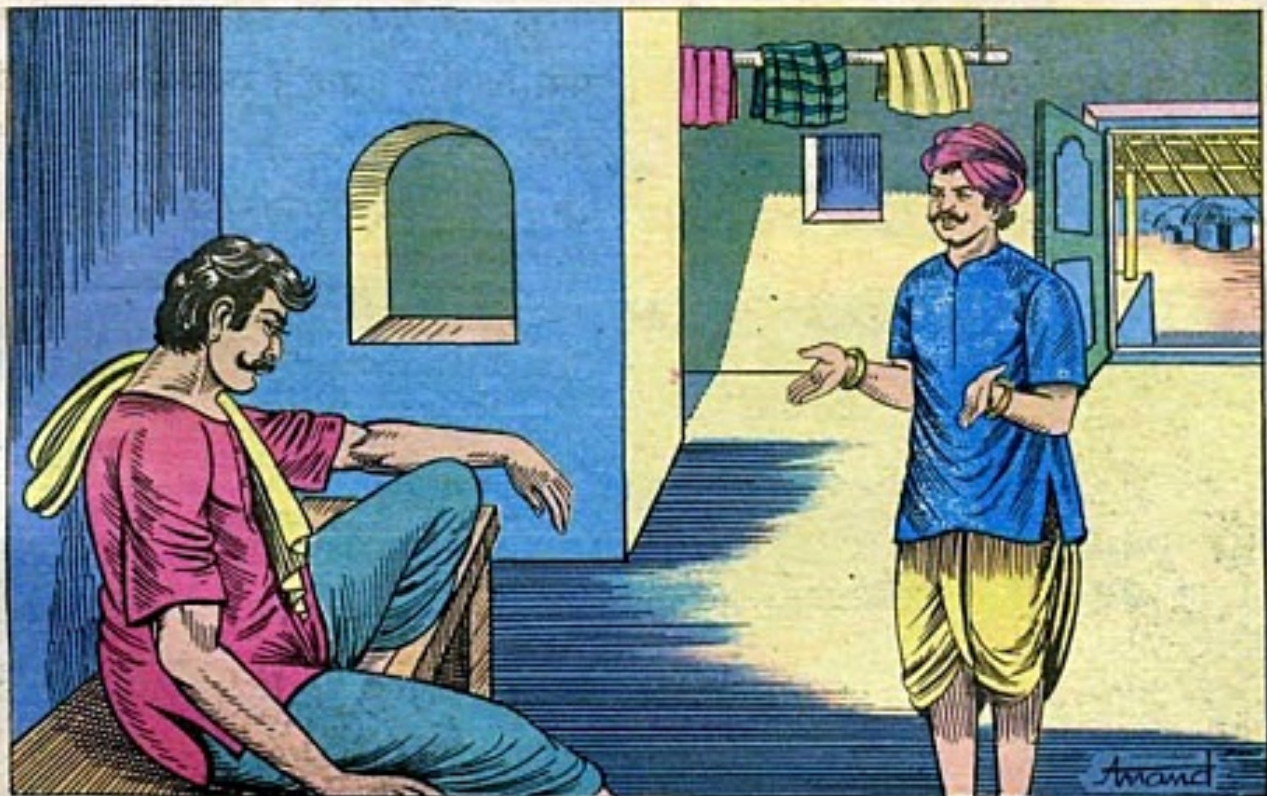
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जुलाई १९८४ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

A. Lakshmana Rao

G. Srinivasa Murthy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ मई १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

मार्च के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो: रोए, पर कोई न सुने!

द्वितीय फोटो: गाए, तो सब सुने!!

प्रेषक: बृजदेव सहगल द्वारा श्री जे. एन. सहगल., मैंफील्ड स्टेट, शिमला-१७१००१ (हि. प्र.)

"क्या आप जानते हैं" के उत्तर

१. फ्रांस निवासी रेने फ्रांकायिस आर्मण्ड नल्ली प्रुधोम। २. फ्रांस निवासी जे० हेर्नी ड्यूरेण्ट। ३. जर्मनी के हिल हेलम कोन्राड रोस्ट जन। ४. हालैण्ड के जाकोबस हेण्डिकस नानूटहाफ। ५. जर्मनी के एमिल वान बेहरिंग।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

निःशुल्क प्रवेश

चन्दामामा कॅमल
रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए
कॅमल
पहला इनाम (१) रु. १५/-
दूसरा इनाम (३) रु. १०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. ५/-
१० प्रमाणपत्र

इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

चंदामामा, पो. बॉ. नं. ११५०१, नरिमन पाइंट पोस्ट ऑफ़िस, बम्बई ४०० ०२१.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

Name: .... Age: ....

Address: ....

....

CONTEST NO 36

प्रवेशिकाएं 31.5.1984 से पहले पहले भेजी जायें.

बिन्दुओं रेखाके साथ काटिये

ज़मीन पर या हवा में—कीड़े-मकोड़े जहाँ भी छिपे हों, फ़िनिट हर जगह फैलता है।

फ़िनिट 'स्प्रेड-ऐक्शन' के लिये सारे खिड़की-दरवाज़े बन्द कर लीजिये, फिर पूरे घर में फ़िनिट का छिड़काव कीजिये। अब फ़िनिट का 'स्प्रेड-ऐक्शन' प्रभाव करने लगता है। दीवारों की छोटी से छोटी दरारों, दरवाजों के पीछे, अलमारी के नीचे, कीड़े-मकोड़ों के छिपने की और भी कई जगहों पर यह पहुँचता है और कीड़े-मकोड़ों को खत्म करता है।

फ़िनिट का वार! कीड़ों की मार!

बच्चों!
मुझे पहचानते हो न?
मैं हूं मिकी माउस!
अब देखना हम सब
मिल कर कैसी कमाल की
मस्ती करते हैं!

पहले, गोल्ड स्पॉट के नीले ढक्कनों के नीचे छिपी मेरी १४ शक्लों में से कोई भी १२ शक्लें ढूंढ निकालो. फिर इन सबको फॉर्म में चिपकाओ और भरे हुए फॉर्म के बदले में वॉल्ट डिज़नी का एक एलबम ले लो जिसमें होंगे तरह तरह के, मौज मस्ती से भरे खेल. हर दो महीने में हम ऐसा ही नया एलबम लाएंगे. अगली बार हो सकता है तुम्हें ढूंढना पड़े डोनाल्ड डक या अंकल स्क्रूज को...ज़रा इनका इंतज़ार करो!

इस क्लब के सदस्य कैसे बनें:

कोई भी ३ एलबम इकट्ठे करो. हर एलबम में दिया गया फॉर्म भरो और नज़दीक के गोल्ड स्पॉट एक्सचेंज सेंटर में दे दो...बस, अब तुम बन जाओगे मेरे क्लब के सदस्य.

अब तुम्हें मिकी माउस क्लब का खास बैज और क्लब का परिचय पत्र भी मिलेगा, जिसे दिखाकर तुम खिलौनों, किताबों, फिल्मों और ऐसी ही कई मनपसंद चीज़ों पर छूट पा सकोगे.

तो क्या अब तुम तैयार हो मुझे पकड़ने के लिए...
रेडी, वन...टू...थ्री!

CHANDAMAMA [Hindi] MAY 1984 Regd.No.M. 5452